



मेरी खेती

मार्च, 2025 | मूल्य : ₹49



विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलियान	01 - 10
बागवानी फसलें	11 - 13
मशीनरी	14 - 22
कृषि सलाह	23 - 25
पशुपालन—पशुचारा	26 - 28
औषधीय खेती	29 - 31

सम्पादकीय

जलवायु परिवर्तन का खरीफ फसलों पर प्रभाव

जलवायु परिवर्तन एक गंभीर वैश्विक समस्या है, जिसका प्रभाव कृषि पर विशेष रूप से देखा जा रहा है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में खरीफ फसलें (जैसे धान, मक्का, बाजरा, सोयाबीन, मूंगफली आदि) विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के प्रभाव में आती हैं। खरीफ फसलों का उत्पादन मुख्यतः वर्षा आधारित होता है, इसलिए तापमान में वृद्धि, अनियमित वर्षा और चरम मौसमी घटनाएं इन फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं।

1. वर्षा का असंतुलन

खरीफ फसलों की खेती मुख्य रूप से मानसूनी बारिश पर निर्भर करती है। जलवायु परिवर्तन के कारण बारिश के पैटर्न में बदलाव आ रहा है। कभी अत्यधिक बारिश से फसलें डूब जाती हैं तो कभी लंबी सूखा अवधि के कारण फसलें मुरझा जाती हैं। इस असंतुलन से फसलों की उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, धान की फसल को संतुलित और निरंतर पानी की आवश्यकता होती है, लेकिन अत्यधिक बारिश होने पर इसकी जड़ें सड़ने लगती हैं।

2. तापमान में वृद्धि

जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। अधिक तापमान के कारण पौधों में जल वाष्पीकरण (स्ट्रॉमिंग) की दर बढ़ जाती है, जिससे मिट्टी में नमी की कमी हो जाती है। इससे फसलें सूखने लगती हैं और उत्पादन क्षमता कम हो जाती है। विशेष रूप से मक्का और मूंगफली जैसी फसलें अत्यधिक तापमान के प्रति संवेदनशील होती हैं।

3. रोग एवं कीट वृद्धि

तापमान और नमी में बदलाव के कारण कई प्रकार के कीट और रोग तेजी से फैलते हैं। उच्च तापमान के कारण कीटों के प्रजनन में वृद्धि होती है, जिससे फसलों को अधिक क्षति पहुंचती है। उदाहरण के लिए, धान की फसल में 'ब्लास्ट रोग' और मक्का में 'फॉल आर्मीवर्म' जैसी समस्याएं अधिक देखी जा रही हैं।

4. मिट्टी की उर्वरता पर प्रभाव

लगातार बढ़ते तापमान और अनियमित वर्षा से मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित होती है। पानी की कमी और उच्च तापमान के कारण मिट्टी की नमी खत्म हो जाती है, जिससे फसलों को आवश्यक पोषक तत्व नहीं मिल पाते। इससे उपज कम हो जाती है।

5. उत्पादन एवं आर्थिक प्रभाव

जलवायु परिवर्तन के कारण खरीफ फसलों की उत्पादकता में कमी आती है, जिससे किसानों की आय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। फसलों के उत्पादन में कमी से खाद्य सुरक्षा भी प्रभावित होती है, जिससे समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।

जलवायु परिवर्तन का खरीफ फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, जिससे किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। ऐसे में आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाना, जल-संरक्षण के उपाय करना और जलवायु के अनुसार सहनशील फसलों का चयन करना आवश्यक है। सरकार और वैज्ञानिक संस्थानों को मिलकर इस चुनौती का सामना करने के लिए प्रभावी कदम उठाने होंगे ताकि खरीफ फसलों की उत्पादकता और किसानों की आजीविका सुरक्षित रह सके।



श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल



श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक



कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेली



डॉ. एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईबीआरआई
इज्जतनगर



प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटर्नरी विश्व विद्यालय,
मथुरा



डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटर्नरी एंड एनिमल साइंस



डॉ. हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय



डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश



डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान



डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा



डॉ. एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार



डॉ. रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)



डॉ. सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा



तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

स्टीविया की खेती कैसे करें: लाभ, किस्में, जलवायु और मिट्टी की संपूर्ण जानकारी

स्टीविया एक उपोष्णकटिबंधीय बहुवर्षीय पौधा है जो अपनी पत्तियों में मीठे स्टीवियोल ग्लाइकोसाइड्स का उत्पादन करता है, जिसके कारण इसे शचीनी तुलसीश या श्मौ तुलसीश भी कहा जाता है। उच्च अक्षांशों पर उगाए गए पौधों में मीठे ग्लाइकोसाइड्स का प्रतिशत अधिक होता है। इस पौधे का उपयोग प्राकृतिक मिठास (खाद्य) के उत्पादन के लिए क्लोरोफिल, फाइटोस्टे. रॉल्स (गैर-खाद्य: चिकित्सा) के स्रोत के रूप में किया जा सकता है। इसके औषधीय उपयोगों में रक्त शर्करा को नियंत्रित करना, उच्च रक्तचाप को रोकना, त्वचा विकारों का उपचार, और दांतों के सड़न को रोकना शामिल हैं। स्टीविया से प्राप्त यौगिक को मधुमेह पीड़ितों के लिए सबसे अच्छा वैकल्पिक स्रोत माना जाता है। इस नए पौधे का मूल्यवर्धन काफी हद तक बढ़ सकता है।

स्टीविया की खेती के लिए मिट्टी और जलवायु

स्टीविया की खेती करने के बारे में सोचने से पहले स्टीविया के लिए मिट्टी और जलवायु की जानकारी होना बहुत आवश्यक होती है, इसकी खेती के लिए मिट्टी और जलवायु से जुड़ी जानकारी निम्नलिखित दी गयी है:

मिट्टी

स्टीविया को एक अच्छी तरह से जल निकासी वाली उर्वरक बालू वाली दोमट या दोमट मिट्टी पसंद है, जिसमें जैविक पदार्थ की उच्च मात्रा हो और पानी की प्रचुर आपूर्ति हो। इसके अच्छे विकास के लिए इसे अम्लीय से लेकर निरंतर (च॰ 6–7) मिट्टी की आवश्यकता होती है। इसे निरंतर नमी की आपूर्ति की आवश्यकता होती है, लेकिन पानी में डूबे हुए नहीं होना चाहिए। बहुत अधिक मिट्टी की नमी सड़न का कारण बन सकती है।

जलवायु

यह एक अर्ध-आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय पौधा है जो उच्च प्रकाश तीव्रता और गर्म तापमान के तहत पत्तियों का अधिक उत्पादन करता है। दिन की लंबाई प्रकाश तीव्रता से अधिक महत्वपूर्ण है। लंबी वसंत और गर्मी की दिनचर्या पत्तियों की वृद्धि को बढ़ावा देती है। छोटे दिन फूलों के खिलने को प्रेरित करते हैं। स्टीविया को अधिकतम ग्रीष्मकालीन धूप में आंशिक छांव पसंद है।

स्टीविया की किस्में

स्टीविया की 3 नामित किस्में सन फ्रूट्स प्राइवेट लिमिटेड, पुणे द्वारा विकसित की गई हैं, जो निम्नलिखित हैं:

- **S-R-B&123:** इसे साल में 5 बार काटा जा सकता है। ग्लाइकोसाइड सामग्री 9–12% के बीच होती है, जो दक्षिण भारत के लिए उपयुक्त है।
- **S-R-B&512:** यह उत्तर भारत के लिए उपयुक्त है और इसमें ग्लाइकोसाइड सामग्री 9–12% के बीच होती है।
- **S-R-B&128:** इसमें सबसे अधिक स्टीवियोसाइड सामग्री होती है, जो 21% तक हो सकती है। यह उत्तर भारत के लिए उपयुक्त है।

वह सामग्री जो 9–12% या उससे अधिक स्टेवियोसाइड उत्पन्न करती है, उसे व्यावसायिक खेती के लिए अच्छे संसाधन के रूप में उपयोग किया जा सकता है और इसे केवल संयुग्मन के द्वारा बनाए रखना चाहिए।

प्रचारण

स्टीविया आमतौर पर तने की कटिंग से प्रचारित किया जाता है, जो आसानी से जड़ लेते हैं। पत्तियों में मिठास प्रजातियों के अनुसार भिन्न होती है। इसलिए, प्रचारण के लिए कटिंग को एक ऐसे स्रोत से प्राप्त किया जाना चाहिए जो उच्च स्टेवियोसाइड सामग्री और कम कड़वाहट वाले हों। रूटिंग को वाणिज्यिक रूटिंग हार्मोन का उपयोग करके बढ़ाया जा सकता है। कटिंग को 2–4 इंच लंबा होना चाहिए, जो वर्तमान वर्ष की वृद्धि के पत्तियों के अक्सिल से ली जाए, जिसमें कम से कम दो पत्तियां भूमि से ऊपर हों। सभी निचली पत्तियों को हटा दिया जाता है और 2 या 3 छोटी पत्तियां रखी जाती हैं। पैक्लोबुट्राजोल / 100 पीपीएम से उपचार करने से जड़ें जल्दी उत्पन्न होती हैं। इस उपचार का प्रभावी परिणाम तब प्राप्त किया जा सकता है, जब कटिंग को फरवरी–मार्च के महीने में लगाया जाए। प्रचारण अन्य समय में भी किया जा सकता है, लेकिन सफलता में भिन्नता हो सकती है।

भूमि तैयारी

भूमि को समतल करने के लिए दो बार डिस्क या हैरो किया जाता है ताकि एक सख्त और चिकना रोपण सतह तैयार हो सके। अंतिम जुताई के दौरान लगभग 50 मीट्रिक टन एफवाईएम/हेक्टर को एक बेसल ड्रेसिंग के रूप में डालना होता है ताकि खाद को मिट्टी में मिलाया जा सके। उचित जल निकासी और सिंचाई चैनलों के साथ क्षेत्र को सुविधाजनक आकार के प्लॉट्स में विभाजित किया जाता है।



मकचरी की खेती: उन्नत विधि, बुआई, देखभाल और कटाई की पूरी जानकारी

भारत एक कृषि प्रधान देश है यहां के किसान खेती के साथ पशुपालन भी करते हैं। पशुपालन से किसानों के घर का खर्च आसानी से चल जाता है। पशुपालक पशुओं से प्राप्त दूध, दही, घी और मक्खन बेचकर महीने में अच्छी कमाई कर लेते हैं। पशुपालकों को पशुओं से अच्छा मुनाफा कमाने के लिए उनको पशुओं को अच्छा पौष्टिक आहार देना पड़ता है, जिसमें हरा चारा सबसे प्रमुख होता है गर्मी के मौसम में अगर पशुओं को हरा चारा मिलता रहे तो उनसे अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। आज के इस लेख में हम एक ऐसे चारे के बारे में जानकारी लेकर आए हैं जो की मकचरी के नाम से जाना जाता है।

मकचरी क्या होती है?

मकचरी प्रचुर मात्रा में कल्ले पैदा करती है और इसकी पत्तियाँ गहरी हरी और संकरी होती हैं, जो लंबे समय तक हरी रहती हैं। मकचरी पशुओं को हरा, सूखा या सहेजकर सिलेज या घास को चारे के रूप में दिया जा सकता है। यह फसल अम्लीय मृदा में उगाई जा सकती है और उन क्षेत्रों में उपयुक्त है जहाँ पानी रुक जाता है।

मकचरी के खेती के लिए जलवायु और मिट्टी?

मकचरी की खेती के लिए मक्का की फसल जैसे स्थिति की आवश्यकता होती है इसके लिए आवश्यक जलवायु की स्थिति और मिट्टी निम्नलिखित हैं:

मकचरी की खेती के लिए जलवायु

मकचरी एक उत्कृष्ट मल्टीकट चारा है और यह गर्म क्षेत्रों में उच्च आर्द्रता और वर्षा वाले स्थानों में अच्छी तरह उगता है।

यह फसल मक्का जैसी दिखती है, लेकिन इसकी पहचान इसके अधिक तिल्लीकरण (tillering) से की जा सकती है। यह आर्द्र उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में अच्छी तरह अनुकूलित होती है।

मकचरी की खेती के लिए मिट्टी

अच्छी तरह से जल निकासी वाली रेतीली दोमट से लेकर दोमट मिट्टियाँ, जिनका pH 5.5 से 7.0 के बीच हो, मकचरी की वृद्धि के लिए आदर्श होती हैं। खेत को निरंतर खरपतवार मुक्त बुआई के लिए पूरी तरह से तैयार किया जाना चाहिए। एक बार हल से जुताई करने के बाद, दो (आड़ा-तिरछा) बार हैरो और पाटे का उपयोग करना पर्याप्त होता है ताकि एक अच्छा बीज बिस्तर तैयार किया जा सकता है।

प्रचारण

स्टीविया आमतौर पर तने की कटिंग से प्रचारित किया जाता है, जो आसानी से जड़ लेते हैं। पत्तियों में मिठास प्रजातियों के अनुसार भिन्न होती है। इसलिए, प्रचारण के लिए कटिंग को एक ऐसे स्रोत से प्राप्त किया जाना चाहिए जो उच्च स्टेवियोसाइड सामग्री और कम कड़वाहट वाले हों। रूटिंग को वाणिज्यिक रूटिंग हार्मोन का उपयोग करके बढ़ाया जा सकता है। कटिंग को 2–4 इंच लंबा होना चाहिए, जो वर्तमान वर्ष की वृद्धि के पत्तियों के अक्सिल से ली जाए, जिसमें कम से कम दो पत्तियाँ भूमि से ऊपर हों। सभी निचली पत्तियों को हटा दिया जाता है और 2 या 3 छोटी पत्तियाँ रखी जाती हैं। पैक्लोबुट्राजोल / 100 पीपीएम से उपचार करने से जड़ें जल्दी उत्पन्न होती हैं। इस उपचार का प्रभावी परिणाम तब प्राप्त किया जा सकता है, जब कटिंग को फरवरी-मार्च के महीने में लगाया जाए। प्रचारण अन्य समय में भी किया जा सकता है, लेकिन सफलता में भिन्नता हो सकती है।

मकचरी की बुआई

मकचरी की खेती में बुआई का समय मौसम के आधार पर निर्धारित किया जाता है, बीज दर बुवाई के तरीके पर निर्धारित किया जाता है।

1. बुआई का समय

- मकचरी की गर्मी की फसलें मार्च से मध्य अप्रैल के बीच सर्वोत्तम बुआई करें।
- मकचरी की मानसून की फसलें मानसून के मौसम के आने के बाद जून या जुलाई में सर्वोत्तम बुआई करें।

2. बीज दर और बुआई की विधि

- ड्रिल बुआई विधि (केराधपोरा विधि) का उपयोग करें, जिसमें पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25–30 से.मी. हो।
- बीज दर 35–45 किलोग्राम/हेक्टेयर।
- बुआई के बाद, प्लैंक को अच्छी तरह से दबाएं ताकि मिट्टी से सही संपर्क हो।
- बीज उपचारक बीजों को एग्रेसिन जीएन या थिराम से 3.0 ग्राम/किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें ताकि बीमारियों से बचाव हो सके।

मकचरी की कटाई

चारा उपयोग के लिए, पहली कटाई बुआई के 60–70 दिन बाद करनी चाहिए और उसके बाद हर कटाई के 40–45 दिन बाद अगली कटाई करनी चाहिए।





ब्राह्मी की खेती: उन्नत विधि, लाभ और उत्पादकता बढ़ाने के टिप्स

ब्राह्मी का नियमित सेवन मानसिक शांति और एकाग्रता बढ़ाने में सहायक होता है। यह तनाव और अनिद्रा जैसी समस्याओं को कम करने के लिए भी प्रभावी मानी जाती है। ब्राह्मी का अर्क त्वचा रोगों और सूजन को ठीक करने में सहायक है। इसके एंटी-ऑक्सीडेंट गुण शरीर की कोशिकाओं को क्षति से बचाते हैं और उम्र बढ़ने के लक्षणों को धीमा करते हैं। ब्राह्मी का उपयोग चाय और स्वास्थ्यवर्धक टॉनिक के रूप में भी किया जाता है, जो समग्र स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करता है। इस लेख में हम आपको इसकी खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

मिट्टी और जलवायु

यह पौधा विभिन्न प्रकार की मिट्टी और जलवायु परिस्थितियों में उगाया जा सकता है। यह खराब जल निकासी वाली मिट्टी और जल-जमाव वाले क्षेत्रों में उपोष्णकटिबंधीय परिस्थितियों में अत्यधिक अच्छी तरह से बढ़ता है। पौधे 33–40°C के उच्च तापमान और 65–80% की आर्द्रता पर तेजी से वृद्धि करते हैं। इसे गर्मी और बरसात के मौसम की फसल के रूप में उगाना सर्वोत्तम है, क्योंकि इस समय अनुकूल परिस्थितियां इसे अच्छा विकास प्रदान करती हैं। इसके लिए रेतीली, दोमट और चिकनी मिट्टी अधिक उपयुक्त होती है। पौधे की वृद्धि और उत्पादकता मिट्टी की संरचना और जल धारण क्षमता पर निर्भर करती है।

भूमि की तैयारी

फसल की बेहतर पैदावार के लिए भूमि की अच्छी तैयारी आवश्यक है। खेत को गहरी जुताई कर खरपतवार रहित बनाना चाहिए। मिट्टी को भुरभुरी बनाने के लिए 2–3 बार जुताई करनी चाहिए।

रोपाई से एक दिन पहले सिंचाई कर मिट्टी की नमी को बढ़ाना चाहिए, ताकि पौधों की कटिंग आसानी से स्थापित हो सके। रोपाई के समय जैविक खाद या कंपोस्ट का उपयोग करना लाभकारी होता है। भूमि की सतह समतल होनी चाहिए, जिससे जल निकासी सही हो सके।

रोपाई

आदर्श रोपाई के लिए 4–5 से.मी. लंबी कटिंग का उपयोग करें, जिनमें कुछ पत्तियां, गांठें और जड़ें मौजूद हों। इन कटिंग को गीली मिट्टी में 40 से.मी. x 40 से.मी. की दूरी पर रोपित करें। रोपाई के तुरंत बाद बाढ़ सिंचाई करें। रोपाई का सही समय मार्च से जून के बीच होता है। यह पौधे मानसून के गर्म और आर्द्र महीनों में तेजी से बढ़ते हैं। इसे बहुवर्षीय अवस्था में भी बनाए रखा जा सकता है। इस अवस्था में, जून और मानसून के बाद अक्टूबर में दो बार कटाई की जाती है।

सिंचाई

सिंचाई फसल की अच्छी वृद्धि और उपज के लिए महत्वपूर्ण है। रोपाई के तुरंत बाद सिंचाई करना आवश्यक होता है। इसके बाद 7–8 दिन के अंतराल पर आवश्यकता अनुसार बाढ़ सिंचाई करें। मानसून के दौरान सामान्यतः सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि पर्याप्त वर्षा जल उपलब्ध होता है। फसल की जल आवश्यकता मिट्टी की जल धारण क्षमता और मौसम पर निर्भर करती है।

खरपतवार नियंत्रण

प्रारंभिक चरण में हर 5–20 दिनों पर हाथ से खरपतवार निकालना अनिवार्य है। पौधों की बढ़त के बाद, जब वे गाढ़ी चटाई जैसी बनावट बना लेते हैं, तो खरपतवार नियंत्रण की आवश्यकता काफी कम हो जाती है। खरपतवार रहित वातावरण फसल की बेहतर वृद्धि सुनिश्चित करता है और उत्पादन क्षमता को बढ़ाता है।

कटाई और उप-प्रसंस्करण

फसल में फूल आने का समय रोपाई के 3 महीने बाद शुरू होता है। कटाई का सही समय अक्टूबर–नवंबर के बीच होता है। पौधे को जड़ से 4–5 से.मी. ऊपर से काटा जाता है, और शेष भाग को पुनर्जनन के लिए छोड़ दिया जाता है। कटाई के बाद पौधों को छाया में या 80°C तापमान पर ओवन में सुखाना चाहिए। सुखाई से पौधे की जैविक मात्रा और बैकोसाइड की गुणवत्ता बनी रहती है। बहुवर्षीय फसल के रूप में इसे बनाए रखने के लिए हर साल कटाई की जाती है।

उपज

फसल से ताजी जड़ी-बूटी की उपज लगभग 300 क्विंटल/हेक्टेयर होती है, जबकि सूखी जड़ी-बूटी की उपज 60 क्विंटल/हेक्टेयर होती है। बैकोसाइड-ए की उपज प्रति हेक्टेयर 85 कि.ग्रा. होती है। पहली कटाई के बाद लगभग 40 क्विंटल सूखी जड़ी-बूटी प्राप्त होती है। वार्षिक कुल उपज 100 क्विंटल सूखी जड़ी-बूटी तक हो सकती है।

ब्राह्मी से बने उत्पाद

ब्राह्मी से विभिन्न आयुर्वेदिक औषधियां बनाई जाती हैं, जैसे ब्राह्मीघृतम, सरस्वतारिष्टम, ब्राह्मीतैलम, मिश्रकस्नेहम, मेमोरी प्लस, और मेगामाइंड प्लस। यह उत्पाद मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने और स्मरणशक्ति को बढ़ाने में सहायक होते हैं। ब्राह्मी के औषधीय गुण इसे एक अत्यंत महत्वपूर्ण औषधीय पौधा बनाते हैं।





अखरोट की खेती कैसे करें? उन्नत किस्में, उत्पादन और लाभ

अखरोट उत्तरी गोलार्ध के शीतोष्ण क्षेत्रों में पाई जाने वाली एक महत्वपूर्ण फल फसल है। हिमालयी क्षेत्र में इसके वाणिज्यिक उत्पादन की संभावनाएं बहुत अधिक हैं। भारत में अखरोट की खेती का कुल क्षेत्रफल 1,09,000 हेक्टेयर है, और कुल उत्पादन 3,00,000 मीट्रिक टन है। जम्मू और कश्मीर राज्य इस मामले में अग्रणी है, जहां पर अखरोट का कुल क्षेत्रफल 85,620 हेक्टेयर और उत्पादन 2,75,450 मीट्रिक टन है। अखरोट का पेड़ एक बार लगने के बाद कई दशकों तक फल देता है, जिससे यह दीर्घकालिक निवेश के रूप में देखा जाता है। 70–80 वर्षों तक इसके फल प्राप्त किए जा सकते हैं, और यह प्रति हेक्टेयर 2–3 टन तक उत्पादन कर सकता है, जिससे यह लाभकारी फसल बन जाती है।

अखरोट की उन्नत किस्में

भारत में कई प्रकार की अखरोट की किस्में उगाई जाती हैं। इनमें प्रमुख किस्में हैं:

1. चंडलर अखरोट

यह किस्म अमेरिकी मूल की है और भारत में भी काफी लोकप्रिय हो रही है। इसकी गुणवत्ता और पैदावार क्षमता अन्य किस्मों से इसे अलग बनाती है।

2. कश्मीर अखरोट

यह किस्म जम्मू-कश्मीर में उगाई जाती है, यह अपनी बड़ी आकार और शानदार स्वाद के लिए प्रसिद्ध है।

3. हर्टले अखरोट

यह किस्म मध्यम से बड़े आकार के अखरोटों का उत्पादन करती है, जिनकी गिरी उच्च गुणवत्ता की होती है।

4. फ्रेंको अखरोट

इस किस्म का विशेष रूप से उन क्षेत्रों में अच्छा उत्पादन होता है जहां की मिट्टी उपजाऊ होती है।

अखरोट की खेती की विधि

अखरोट की खेती में किसानों को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है:

1. भूमि की तैयारी

अखरोट के पौधे को अच्छे परिणाम देने के लिए दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है, जिसका pH स्तर 6–7 होना चाहिए। भूमि की जुताई के बाद उसे समतल करके रोपण किया जाता है।

2. पौधारोपण

अखरोट के पौधों को दिसंबर से फरवरी तक रोपना सर्वोत्तम रहता है। पौधों को 8–10 मीटर की दूरी पर लगाना चाहिए ताकि वे पर्याप्त सूरज की रोशनी और वायु का लाभ उठा सकें।

3. सिंचाई व्यवस्था

अखरोट के पौधों को ज्यादा पानी की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन शुरुआत में नियमित सिंचाई आवश्यक होती है। ड्रिप इरिगेशन का प्रयोग इस फसल के लिए सबसे उपयुक्त होता है, क्योंकि इससे पानी की बचत होती है और पौधों को सही मात्रा में पानी मिलता है।

4. उर्वरक और पोषण प्रबंधन

अखरोट के पौधों को नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटैश की जरूरत होती है, जिनसे उनकी बढ़वार और फलने-फूलने में मदद मिलती है। जैविक खाद का उपयोग भी मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाता है और फसल की गुणवत्ता में सुधार करता है।

5. कीट और रोग नियंत्रण

अखरोट की खेती में कीटों और रोगों से बचाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। ब्लाइट (बैक्टीरियल रोग) और नट बोअर (कीट) जैसे समस्याओं का समय पर इलाज आवश्यक होता है। इसके लिए कीटनाशकों और फफूंदनाशकों का सही उपयोग करना चाहिए।

अखरोट की कटाई और प्रसंस्करण

अखरोट की कटाई सामान्यतः सितंबर से अक्टूबर के बीच की जाती है, जब फल पूरी तरह से पक चुके होते हैं। कटाई के बाद, इन फलों को अच्छे से सूखा कर उनका बाहरी खोल हटाया जाता है। फिर इन्हें छांटकर और साफ करके पैक कर बाजार में भेजा जाता है।

अखरोट की पैकेजिंग और भंडारण

अखरोट की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए, उसे ठंडे और सूखे स्थानों पर रखा जाना चाहिए। एयरटाइट कंटेनरों का उपयोग करने से उसकी ताजगी बनी रहती है और कीटों तथा फंगस से भी बचाव होता है। यदि भंडारण सही तरीके से किया जाए, तो अखरोट का दीर्घकालिक उपयोग संभव होता है, और इसका बाजार मूल्य भी बढ़ता है। अखरोट की खेती से न केवल कृषकों को उच्च आय होती है, बल्कि इससे भूमि की उर्वरता में भी सुधार होता है। यह पौधों के लिए वातावरण को सुधारने के साथ-साथ, मृदा संरक्षण में भी मदद करता है। साथ ही, अखरोट की वैश्विक मांग बढ़ रही है, जिससे यह एक लाभकारी निर्यात उत्पाद भी बन गया है। अखरोट की खेती का दीर्घकालिक लाभ और इसके पर्यावरणीय फायदों को देखते हुए, यह भारतीय किसानों के लिए एक आदर्श फसल बन सकती है, जो उन्हें सशक्त बनाने में मदद करेगी।



दरेक पेड़ की उगाने की पूरी गाइड: खेती, बीज और फायदे

दरेक नीम के जैसे दिखने वाला पौधा है। भारत में भी इसका उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है, संस्कृत में इसे महानिम्बा, हिमरुद्रा और हिंदी में बकेन भी कहते हैं। यह नीम की तरह दिखता है। यह ईरान और पश्चिम हिमालय के कुछ हिस्सों में आम है। यह मिलिआसीआई जातियों से संबंधित है। इस जाति का मूल निवास स्थान पश्चिमी एशिया था। 45 मीटर ऊँचा पत्ते झड़ने वाला वृक्ष है। दरेक आम तौर पर टिम्बर का काम करता है, लेकिन इसकी गुणवत्ता कम है।

जलवायु और मिट्टी का चयन

दरेक गर्म जलवायु में अच्छी तरह से उगता है। इसे 20–40°C तापमान वाली जगहों पर उगाया जा सकता है। दरेक की खेती के लिए अच्छे जल निकासी वाली दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है, लेकिन यह कम उपजाऊ मिट्टी में भी उग सकता है।

बीज की तैयारी

- दरेक के बीज (निबौली) का उपयोग पौधे तैयार करने के लिए किया जाता है।
- बीज को सीधे बुवाई के लिए तैयार किया जा सकता है, लेकिन अंकुरण बढ़ाने के लिए बीजों को 24 घंटे पानी में भिगोना उचित होता है।
- बीज को 1–2 से.मी. गहरे गड्ढे में बोना चाहिए।

पौधों की रोपाई

बीज अंकुरित होने के बाद, 2–3 महीने में जब पौधा 20–25 से.मी. का हो जाए, तब इसे खेत में रोपा जा सकता है। पौधों के बीच 5–6 मीटर की दूरी रखनी चाहिए, ताकि उन्हें बढ़ने के लिए पर्याप्त जगह मिल सके।

सिंचाई

- दरेक की खेती के लिए अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। शुरुआती समय में हर 15–20 दिनों में हल्की सिंचाई की जा सकती है।
- बरसात के मौसम के दौरान सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है।

खाद और उर्वरक

नीम की खेती में अधिक उर्वरक की आवश्यकता नहीं होती है। हालांकि, पौधे की अच्छी वृद्धि के लिए जैविक खाद (गोबर की खाद, वर्मीकम्पोस्ट) का प्रयोग किया जा सकता है। इस वृक्ष की छाल गहरे स्लेटी रंग की है। यह एक सजावटी वृक्ष के रूप में भी उगाया जाता है। इसके फूल गर्मियों में खिलते हैं और सर्दियों या ठण्डे मौसम में सबसे पहले पकते हैं। विभिन्न फसलों के कीटों, जैसे दीमक, घास का टिड्डा और टिड्डियां को इसके पत्तों, निमोलियों, बीजों और फलों के अर्क से बचाया जा सकता है।



शतावरी की खेती कैसे करें? जानें बुवाई, खाद, सिंचाई और कटाई की पूरी जानकारी

शतावरी का पौधा भारत के हिमालय क्षेत्रों में पाया जाता है। इसके सफेद फूल गुच्छों में फल देते हैं। औषधीय दवाओं में इसके कंद का इस्तेमाल भी गुच्छों में होता है। शतावरी पौधे को पूरी तरह विकसित होने और कंद के इस्तेमाल लायक होने में तीन वर्ष लगते हैं। इसकी खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे अच्छी है। शतावरी पौधों को अधिक सिंचाई नहीं चाहिए। शुरुआत में सप्ताह में एक बार और बाद में महीने में एक बार हल्की सिंचाई करनी चाहिए। इस लेख में हम आपको इसकी खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

शतावरी की खेती के लिए जलवायु की आवश्यकता शतावरी की खेती समशीतोष्ण और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में की जाती है। दिन में 25–30 डिग्री सेल्सियस और रात में 15–20 डिग्री सेल्सियस का औसत तापमान आदर्श होता है।

शतावरी की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी और मिट्टी की तैयारी

- शतावरी की खेती से सफल उत्पादन के लिए अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी जरूरी है, और रेतीली मिट्टी भी बेहतर होती है।
- शतावरी की खेती क्राउन रॉट रोग को नियंत्रित करने के लिए अच्छी जल निकासी महत्वपूर्ण है।
- शतावरी के व्यावसायिक रोपण को रेतीली दोमट मिट्टी से भारी मिट्टी में नहीं लगाया जाना चाहिए।
- ऐसी जगहों से बचें जहाँ भारी बारिश के बाद 8 घंटे से ज्यादा पानी जमा रहता है। साथ ही मिट्टी इष्टतम च॰ 6.5–7.5 है।

शतावरी की खेती किस समय की जाती है?

शतावरी की खेती जलवायु परिस्थित के हिसाब से की जाती है, भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में शतावरी की खेती मार्च से मई तक की जाती है और मैदानी भागों में इसकी खेती जुलाई से नवंबर के दौरान की जाती है।

शतावरी को कैसे उगाया जाता है?

शतावरी को बीज, पौध और मुकुट के माध्यम से उगाया जा सकता है, लेकिन सबसे आम तरीका केवल बीज के माध्यम से ही उगाया जाता है। एक हेक्टेयर में खेती के लिए लगभग 3–4 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

शतावरी की खेती में खाद और उर्वरक प्रबंधन

प्रारंभिक मात्रा के रूप में प्रति हेक्टेयर 150–250 क्विंटल फार्म यार्ड खाद (एफवाईएम) का उपयोग करें। इसके अतिरिक्त, प्रति हेक्टेयर 80–120 किलोग्राम नाइट्रोजन, 80–100 किलोग्राम फॉस्फोरस और 60–80 किलोग्राम पोटैशियम का वर्ष में दो बार उपयोग करें।

पहली बार नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटैशियम (छ, च और झ) की मात्रा मार्च की शुरुआत में वसंत ऋतु में स्पीयर्स के पहले उभरने से ठीक पहले डालें। दूसरी बार यह मात्रा फसल कटाई के मौसम के समापन पर मई के मध्य में डालें। उर्वरक को मिट्टी की सतह पर या बहुत हल्की गहराई पर लगाएं।

शतावरी की रोपाई करने की विधियां

शतावरी की खेती में कई प्रकार की रोपाई विधियों का इस्तेमाल किया जाता है जो की निम्नलिखित दी गई हैं

1. क्राउन रोपण

- केवल प्रमाणित क्राउन का उपयोग करें, क्योंकि अस्वस्थ क्राउन कई बीमारियां फैला सकते हैं।
- शतावरी क्राउन (जड़ें और पौधे की कली) इस तरह लगाएं कि क्राउन का ऊपरी भाग मिट्टी की सतह से 15 से.मी. नीचे हो।
- रोपण की गहराई महत्वपूर्ण है। यदि गहराई कम हो तो शतावरी छोटे आकार के स्पीयर्स पैदा करेगा, जो व्यावसायिक रूप से उपयोगी नहीं होंगे।
- यदि गहराई अधिक हो, तो स्पीयर्स बड़े होंगे लेकिन उनकी संख्या कम होगी।
- क्राउन को पंक्ति में 30 से.मी. की दूरी पर और पंक्तियों के बीच 150 से.मी. की दूरी पर लगाएं, जिससे प्रति हेक्टेयर 21,750 क्राउन लगाए जा सकें।
- रोपण के बाद क्राउन को 5–7.5 से.मी. मिट्टी से ढक दें।
- जैसे-जैसे पौधे बढ़ें, 2.5–5 से.मी. मिट्टी से 3–5 बार जुताई के दौरान खाई को धीरे-धीरे भरें, लेकिन पौधों को पूरी तरह न ढकें।
- पहली वर्षा के जुलाई तक खाई पूरी तरह भर जानी चाहिए।

2. एकल और दोहरी पंक्तियों का रोपण

- सीधे बीज या रोपाई से तैयार शतावरी को एकल या दोहरी पंक्तियों में 5 फीट की दूरी पर बेड्स के बीच लगाया जा सकता है।
- एकल पंक्तियां ष आकार के बेड्स के शीर्ष पर लगाई जानी चाहिए।
- ष आकार की पंक्तियां चौड़े फर्रो ओपनर और उसके बाद बेड शेपर से तैयार की जाती हैं।
- सीधे बीज से तैयार या रोपाई किए गए शतावरी की दोहरी पंक्तियां शेल्व्ड बेड्स पर लगाई जानी चाहिए।
- रोपाई वाले पौधों को कोणीय खाई के किनारे भी लगाया जा सकता है।
- पंक्तियों के मध्य ष्ट आकार बनाना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह बारिश के दौरान बेड्स के किनारों से मिट्टी को बहने से रोकने के लिए जगह प्रदान करता है।

3. सीधी बुवाई विधियां

- बीजों को पंक्ति में 5 सेमी की दूरी पर और 2 से 2.5 से.मी. की गहराई में बोया जाना चाहिए।
- एकल पंक्ति के लिए प्रति हेक्टेयर 2.5–3.4 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है, जबकि दोहरी पंक्ति के लिए 4.5 से 6.8 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है।
- शतावरी के बीज 24°C पर सबसे अच्छी तरह अंकुरित होते हैं।
- प्रत्यक्ष बुवाई तब पसंद की जाती है जब मिट्टी का तापमान कम से कम 16°C हो।

4. पौध रोपाई विधि

- शतावरी के पौधे पीट पॉट्स, प्लास्टिक पॉट्स, ट्रे, पीट पेलेट्स या बीज ट्रे में सफलतापूर्वक उगाए जा सकते हैं।
- पौधों की वृद्धि और जीवित रहने की दर आमतौर पर बड़े कोशिकाओं (5x5 से.मी. तक) के साथ बेहतर होती है।
- ज्यादातर कृत्रिम मिट्टी के माध्यम अच्छे ट्रांसप्लांट तैयार करते हैं।
- अच्छी वृद्धि और जड़ प्रणाली के विकास के लिए बीज को 1.25 से.मी. से अधिक गहराई पर नहीं लगाना चाहिए।
- पौधों की रोपाई टंड के खतरे के बाद, लेकिन तापमान 32°C से ऊपर जाने से पहले करना बेहतर होता है।
- अनुकूल परिस्थितियां आमतौर पर अप्रैल और मई में होती हैं।

शतावरी की खेती में सिंचाई

- अच्छी अंकुरण और शुरुआती पौध वृद्धि के लिए पर्याप्त नमी बनाए रखनी चाहिए।
- पहले दो महीनों में, जड़ प्रणाली स्थापित होने तक शतावरी के पौधों को सूखने न दें।
- इस शुरुआती चरण में जल तनाव से उपज कम हो सकती है।
- जड़ प्रणाली स्थापित होने के बाद, सिंचाई की आवश्यकता केवल अत्यधिक सूखे के दौरान होती है।

शतावरी की खेती में खरपतवार प्रबंधन

शतावरी उत्पादन में खरपतवार नियंत्रण बहुत महत्वपूर्ण है। खरपतवार नियंत्रण कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा समय पर जुताई है, विशेष रूप से पहले दो वर्षों में। पहले वर्ष में, शतावरी की कम से कम एक महीने में एक बार, सितंबर तक या कुल 6 बार जुताई करनी चाहिए। जुताई की संख्या को खरपतवारनाशकों का उपयोग करके कम किया जा सकता है। फसल कटाई के बाद मौजूद सभी खरपतवारों को हटा दें। इन खरपतवारों को हटाने के लिए केवल उथली जुताई (2.5 से 5 से.मी.) करें। गहरी जुताई से ताज को नुकसान होगा और उपज में भारी कमी आ सकती है।

शतावरी की कटाई

- रोपाई के पहले वर्ष में सीमित कटाई (2 से 3 सप्ताह तक, या प्रति पौधा 8 शतावरी) की जा सकती है।
- दूसरे वर्ष में कटाई को सीमित रखना चाहिए क्योंकि इससे शतावरी का आकार थोड़ा कम हो सकता है, जो कटाई रोकने का संकेत है।
- शतावरी को एक बड़ा जड़ तंत्र विकसित करने में लंबा समय लगता है।
- लंबे समय तक स्वस्थ शतावरी उत्पादन के लिए एक बड़ी जड़ प्रणाली आवश्यक है।
- प्रारंभिक वर्षों में अधिक कटाई न करें, क्योंकि इससे बिस्तर की आयु कम हो सकती है और कुल उपज और लाभ में भारी कमी हो सकती है।
- तीसरे वर्ष की वृद्धि के दौरान 6 से 8 सप्ताह तक कटाई करें, आमतौर पर मध्य मई तक।
- भालों को 20 से.मी. लंबा होने दें और फिर मिट्टी की सतह पर चाकू से काटें या हाथ से तोड़ें।
- भालों को 22.5 से.मी. से अधिक लंबा नहीं होने देना चाहिए।
- कटाई का निर्णय प्रति पंक्ति एक फुट पर औसतन एक कटाई योग्य शतावरी के आधार पर किया जाता है।
- जब तापमान 27°C से अधिक हो, तो प्रतिदिन कटाई करना आवश्यक हो सकता है।

मेरीखेती वेबसाइट अब 5 अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध है

தமிழ்
(Tamil)

ಕನ್ನಡ
(Kannada)

English

తెలుగు
(Telugu)

ਪੰਜਾਬੀ
(Punjabi)





खरबूजा की खेती: जलवायु, मिट्टी, बुवाई विधि और अधिक उत्पादन के टिप्स

खरबूजा, जो ककड़ी परिवार का सदस्य है, भारत में बड़े पैमाने पर उगाया जाता है। इसकी खेती मुख्य रूप से शुष्क मौसम में, यानी जायद के मौसम में की जाती है। देश के उत्तरी हिस्सों जैसे पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश और बिहार के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में खरबूजा की खेती बहुतायत में होती है। यह फल मीठा होता है, जिसके कारण इसे ताजे रूप में ही खाया जाता है। खरबूजे में उच्च मात्रा में कार्बोहाइड्रेट, विटामिन A और C पाए जाते हैं। इसके बीजों में 40–45% तक तेल होता है। औषधीय दृष्टिकोण से भी खरबूजा बहुत महत्वपूर्ण है। इस लेख में हम आपको खरबूजा की खेती से जुड़ी सारी जानकारी देंगे, जिससे आप भी इस खेती को अपनाकर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।

जलवायु और मिट्टी

खरबूजा एक शुष्क जलवायु में उगने वाला पौधा है। इसकी खेती भारत के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में विशेष रूप से जायद के मौसम में होती है। अच्छी उपज के लिए बालू-दोमट मिट्टी आदर्श मानी जाती है, जिसमें जल निकासी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए, क्योंकि यह पौधा अधिक नमी को पसंद नहीं करता है। मिट्टी का पीएच मान 6–7 होना

खेत की तैयारी

खरबूजे के बीजों की बुवाई से पहले खेत की अच्छी तरह से तैयारी करनी चाहिए, ताकि बीजों की वृद्धि अच्छी हो सके। खेत को 2–3 बार हेरो या कल्टीवेटर से समतल किया जाना चाहिए। 1 अंतिम जुताई के समय 4–5 टन गोबर की खाद को मिट्टी में अच्छे से मिला लेना चाहिए। उत्तरी भारत में बुवाई फरवरी के अंत से मार्च तक की जाती है, जिसे जायद का मौसम कहा जाता है।

बीज की मात्रा और बुवाई का तरीका

खरबूजे की बुवाई के लिए 600–800 ग्राम बीज प्रति एकड़ का उपयोग किया जाता है। बुवाई से पहले खेत की नमी की जांच करना जरूरी है। बीजों को खेत में क्यारियों में 0.5–1 मीटर की दूरी पर बोना चाहिए, जिससे पौधों के लिए पर्याप्त जगह मिल सके। 23,334 पौधों के उत्पादन के लिए लगभग 250 प्रोटे की आवश्यकता होती है, जो एक हेक्टेयर के लिए ऊंचे बिस्तर वाली एकल पंक्ति प्रणाली में 1.5 मीटर • 30 से.मी. की दूरी पर आवश्यक होते हैं। 30 से.मी. के अंतराल पर 120 से.मी. चौड़ाई वाले बिस्तरों को उठाएं और पार्श्वों को प्रत्येक बिस्तर के केंद्र में रखें। सीधी बुआई या रोपाई 30 से.मी. की दूरी पर चिह्नित रस्सियों का उपयोग करके, पार्श्व के साथ 1.5 मीटर की दूरी पर और उठाए गए बिस्तर एकल पंक्ति प्रणाली में 30 से.मी. के अंतराल पर की जाती है।





बेर की खेती: जलवायु, उन्नत किस्में और अधिकतम उत्पादन की पूरी जानकारी

बेर की खेती भारत में बरे पामने पर की जाती हैं। बेर को गरीब के सेब के नाम से भी जाना जाता है। बेर एक तेजी से बढ़ने वाला, छोटा फैलने वाला पेड़ है, जिसकी शाखाएँ लगभग बेल जैसी लटकती हैं। इसके गोल से अंडाकार आकार के रेशमी भूरे रंग के फल में 5.4–8.0% शर्करा और 100 ग्राम में 85–95 मिलीग्राम एस्कॉर्बिक एसिड (विटामिन C) होता है। मध्य एशिया को बेर का उत्पत्ति केंद्र माना जाता है। यह पेड़ लैंक कीट की परवरिश के लिए मेजबान पौधा होता है। लैंक कीट की परवरिश से लैंक का उत्पादन होता है। बेर की जड़ों का पाउडर कई औषधीय गुणों से भरपूर होता है, जैसे कि अल्सर, बुखार और घावों का इलाज। तने की छाल का पाउडर दस्त के इलाज के लिए उपयोगी होता है। इस लेख में हम आपको बेर की खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

जलवायु और मृदा आवश्यकताएँ

भारत में बेर (*Zizyphus Mauritiana*) की खेती उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में की जाती है, जबकि जिजीफस जुज्यूब, चीनी बेर, एक पर्णपाती पेड़ है जो समशीतोष्ण क्षेत्रों में पाया जाता है। बेर एक आदर्श फलवृक्ष है जो शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्रों में उग सकता है, जहाँ बहुत अधिक सिंचाई संभव नहीं होती। यह 40°C तक उच्च तापमान सहन कर सकता है, लेकिन ठंडे तापमान से यह प्रभावित होता है। इसकी गहरी ताड़ की जड़ प्रणाली के कारण, यह अत्यधिक जलवायु तनाव और व्यापक मृदा की स्थिति में भी उग सकता है,

जो प्रमुख फलों और अन्य फसलों के लिए अनुपयुक्त होती है। फसलों के लिए अनुपयुक्त होती है। क्षारीय मृदा में उच्च पीएच (9.5 तक) और सोडिक मृदा में, प्रति गड्डे में 5 किलोग्राम जिप्सम डालना चाहिए, जो ऊपर की मिट्टी के साथ मिलाकर एक सप्ताह पहले गड्डे में पानी डालकर रोपण से पहले तैयारी करनी चाहिए। इस प्रकार, बेर पौधा स्थापित किया जा सकता है। कुछ हद तक बेर पानी के ठहराव को भी सहन करता है।

बेर की उन्नत किस्में

अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों का चुनाव करना बहुत आवश्यक है। बेर की उन्नत किस्में निम्नलिखित दी गयी हैं, जिनसे अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

1. कैतिली

यह एक किस्म है जिसमें सीधे कांटे होते हैं, लेकिन उतने अधिक नहीं। पत्तियाँ अंडाकार होती हैं, जिनके किनारे थोड़े कटे होते हैं। फल अंडाकार-दीर्घाकार होते हैं, जिनका आकार 3.37 सेंटीमीटर लंबा और 1.9 सेंटीमीटर मोटा होता है, जिनका वजन 6.22 ग्राम होता है। बीज दीर्घाकार और नुकीला होता है।

2. उम्रान

इस किस्म में पेड़ मध्यम आकार के होते हैं और झाड़ीदार फैलने वाली शाखाएँ होती हैं जो लगभग जमीन को छूती हैं। कांटे मुड़े हुए होते हैं। पत्तियाँ अंडाकार-दीर्घाकार होती हैं जिनके किनारे स्पष्ट रूप से कटे होते हैं। फल दीर्घाकार होते हैं जिनका आकार 4.2 सेंटीमीटर लंबा और 3.2 सेंटीमीटर मोटा होता है।

3. गोला

इसकी शाखाएँ फैलने वाली होती हैं। फल लगभग गोल होते हैं और आकार में चपटा होता है। छिलका चमकीला पीला और चिकना होता है, और फल जनवरी में पकते हैं। प्रत्येक फल का वजन 14–25 ग्राम होता है। प्रत्येक पेड़ लगभग 100–125 किलोग्राम फल देता है।

4. सेओ

पत्तियाँ अंडाकार से अंडाकार-दीर्घाकार होती हैं, जिनकी निचली छोर गोल होती है और शीर्ष छोर नुकीला होता है। फल गोल होते हैं जो क्रैब ऐप्पल जैसा दिखते हैं, छिलके का रंग हल्का गुलाबी पीला होता है और पकने पर कुछ धब्बे भी दिख सकते हैं। इसे पंजाब के पटियाला के पास के स्थान सणौर से चुना गया है।

5. सेब

यह एक जल्दी पकने वाली किस्म है। फल सुनहरे पीले रंग के होते हैं और हल्के दीर्घाकार होते हैं (3.0 सेंटीमीटर x 2.5 सेंटीमीटर)। यह पेड़ प्रति वर्ष 90–100 किलोग्राम फल देता है और कई किस्मों के लिए एक अच्छा परागदाता होता है।

6. बनारसी

यह एक मध्य-ऋतु की किस्म है। पेड़ 8–12 मीटर ऊंचे होते हैं। फल गोल से दीर्घाकार होते हैं और छिलका पकने के बाद सुनहरे पीले रंग का हो जाता है। यह किस्म तमिलनाडु की स्थितियों में अच्छा प्रदर्शन करती है। प्रत्येक पेड़ प्रति वर्ष 100–110 किलोग्राम फल देता है।

7. छुहारा

यह एक अन्य मध्य-ऋतु की किस्म है जिसमें पेड़ आधे ऊंचाई वाले होते हैं और शाखाएँ फैलती हैं। फल अंडाकार-दीर्घाकार होते हैं, आकार 2.9 सेंटीमीटर x 2.1 सेंटीमीटर होता है और इनका वजन 16.8 ग्राम होता है। पूरी तरह से पकने पर फल हरे-पीले रंग के होते हैं।

8. संधूरा नारनौल (सणौर नं. 1)

इसमें खड़ा पेड़ होता है। फल अंडाकार-दीर्घाकार से लंबा होते हैं, और निचला हिस्सा थोड़ा नुकीला होता है। फल हरे-पीले से सुनहरे पीले होते हैं। आकार 4.45 x 2.18 सेंटीमीटर होता है और छिलका पतला होता है। औसत उत्पादन 80 किलोग्राम/पेड़/वर्ष होता है।

9. एलाईची

पेड़ फैलने वाले होते हैं और फलों का आकार इलायची जैसा होता है, इसलिए इसे शैलाईची कहा जाता है। फल छोटे होते हैं, प्रत्येक का वजन 6 ग्राम होता है और आकार 2.05 सेंटीमीटर x 1.88 सेंटीमीटर होता है। औसत उत्पादन 115 किलोग्राम/पेड़/वर्ष होता है।

बेर की खेती के लिए भूमि की तैयार और रोपण

बेर को 'T' कलम या उल्टे 'T' कलम द्वारा *Z. jujuba*, *Z. xylocarpa* और *Z. rotundifolia* के बीजांकुरों पर तैयार किया जाता है। जंगली किस्मों के फल लिए जाते हैं, बीज निकाले जाते हैं और 17% नमक घोल में भिगोकर उस बीज को अलग किया जाता है जो तैरता है। जो बीज डूबते हैं, उन्हें लिया जाता है और 5 मिनट तक सांद्र H_2SO_4 (सल्फ्यूरिक एसिड) में भिगोकर धो लिया जाता है और फिर 48 घंटे तक ठंडे पानी में भिगोया जाता है। इसके बाद, इन बीजों को 25 X 15 सेंटीमीटर आकार के 300 गेज मोटाई वाले पॉली बैग में बोया जा सकता है। बीजों को अंकुरित होने में 10–15 दिन लगते हैं। चूंकि बेर और जंगली किस्मों में गहरी ताड़ की जड़ प्रणाली का विकास बहुत तेज होता है, जब बीजांकुरों के पास दो पत्तियाँ होती हैं, तो इन्हें मुख्य खेत में 1 X 1 X 1 मीटर आकार के गड्ढों में रोपित किया जाता है, जिनमें 20 किलोग्राम खेत की गोबर खाद (FYM) ऊपर की मिट्टी डाली जाती है और सिंचाई की जाती है। यदि उपचारित बीजों को सीधे गड्ढों में बोना है, तो प्रत्येक गड्ढे में 2–3 बीज प्रति गड्ढे की दर से 3 सेंटीमीटर गहरे बोए जाते हैं। सामान्यतः आवश्यक किस्मों के पौधों को इस बीजांकुरों पर 90 दिनों के बाद शकलमश से गुड़ाई की जाती है। यदि हमें पॉलीबैग में उगाए गए बीजांकुरों को कलम करना है, तो बड़े आकार के पॉलीबैग का उपयोग करना होगा क्योंकि ताड़ की जड़ बहुत तेजी से बढ़ती है। जून से अगस्त तक का समय कलम लगाने के लिए सबसे अच्छा होता है ताकि अधिकांश कलम का निचोड़ (bud&take) हो सके। चयनित कलम की छड़ी 0.9 सेंटीमीटर व्यास की होनी चाहिए, जो लगभग 1 साल पुरानी और मजबूत कलियों वाली हो। इन कलमों में अंकुरण के लिए लगभग 7–10 दिन लगते हैं।

बेर की तुड़ाई और उत्पादन

बेर में, केवल वही फल सही पकने के चरण में तोड़े जाते हैं, जो सही तरीके से पकते हैं। जब किसी विशेष किस्म का फल पूरा आकार प्राप्त कर लेता है और उसका रंग पीला या सुनहरा पीला हो जाता है, उस समय बेर को तोड़ना चाहिए। 10–20 वर्ष पुराने पेड़ से औसतन 100–200 किलोग्राम फल प्रति वर्ष प्राप्त होते हैं। यदि फलों को भंडारण करना हो, तो इन्हें 30°C तापमान और 85–90% आर्द्रता पर 30 से 40 दिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

आधुनिक टेक्नोलॉजी बेमिसाल ताकत

SONALIKA **TIGER** DI 65 4WD

सबसे बड़ा
CRDS इंजन
4712 CC



इंजन

65 HP पॉवर
55 HP ईंधन माइलेज

ट्रेम स्टेज-IV





स्टैंडर्ड DI 355 ट्रैक्टर: पावरफुल इंजन, फीचर्स, कीमत और पूरी जानकारी

स्टैंडर्ड कंपनी के ट्रैक्टर वर्तमान समय में किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। स्टैंडर्ड DI 355 ट्रैक्टर इस कंपनी का एक शक्तिशाली और आकर्षक मॉडल है, जो छोटे और बड़े किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है। यह ट्रैक्टर 55 HP की पावर के साथ आता है और सभी प्रकार के कृषि उपकरणों को आसानी से चला सकता है।

स्टैंडर्ड DI 355 ट्रैक्टर का इंजन

स्टैंडर्ड DI 355 ट्रैक्टर में 55 एचपी का दमदार इंजन है। इसमें 3 सिलिंडर और 3066 cc की क्यूबिक क्षमता है। यह इंजन 2200 आरपीएम पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है। इंजन को ठंडा रखने के लिए इसमें वाटर कूल्ड सिस्टम दिया गया है। साथ ही, इसमें 45 एचपी का शक्तिशाली पीटीओ भी है।

स्टैंडर्ड DI 355 ट्रैक्टर की विशेषताएँ

- स्टैंडर्ड DI 355 ट्रैक्टर के गियरबॉक्स में 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियर्स दिए गए हैं। Dual clutch के साथ में ये ट्रैक्टर आता है।
- स्टैंडर्ड DI 355 ट्रैक्टर में स्टीयरिंग प्रकार पावर स्टीयरिंग है। इसे नियंत्रित करना आसान है और इसकी तेज प्रतिक्रिया है जो उच्च पकड़ और कम फिसलन प्रदान करती है।

- स्टैंडर्ड DI 355 ट्रैक्टर में पीटीओ की बात करे तो इस ट्रैक्टर में P.T.O में 6 स्प्लिनेस वाली शाफ्ट मिलती है। स्टैंडर्ड DI 355 कल्टीवेटर, रोटरी टिलर, हल, प्लांटर और अन्य उपकरणों के लिए सर्वश्रेष्ठ ट्रैक्टर है।
- ट्रैक्टर में Oil Immersed Brake दिए गए हैं, जिससे ट्रैक्टर को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है।
- स्टैंडर्ड DI 355 ट्रैक्टर की Lifting कैपेसिटी 1800 किलोग्राम है जो कि Lower Link एंड्स पर इस ट्रैक्टर में मिलती है।
- स्टैंडर्ड DI 355 ट्रैक्टर के अंदर कंपनी ने Self स्टार्टर मोटर और अल्टरनेटर भी दिया है।
- ट्रैक्टर में टायर्स की बात करे तो इस ट्रैक्टर के फ्रंट के टायर 7.5X16 और रियर टायर 14.9X28 के मिलते हैं।

स्टैंडर्ड DI 355 ट्रैक्टर की कीमत

स्टैंडर्ड DI 355 ट्रैक्टर की कीमत की बात करे तो इस ट्रैक्टर की कीमत 6.70–7.50 लाख रुपए तक आपको मिलती है। इस ट्रैक्टर की कीमत में कई स्थानों पर आपको फरक भी देखने को मिलता है। इस लेख में आपने स्टैंडर्ड DI 355 ट्रैक्टर के बारे में जानकारी प्राप्त की। मेरीखेती प्लेटफॉर्म पर आप ट्रैक्टरों, कृषि उपकरणों, उनकी कीमतों, तुलना, फोटो, वीडियो, और अन्य अपडेट की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।



फार्मट्रैक चौंपियन 39: 41 HP का शक्तिशाली ट्रैक्टर, फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और कीमत

फार्मट्रैक चौंपियन 39 स्पष्ट रूप से 41 hp श्रेणी के सेगमेंट में सबसे शक्तिशाली ट्रैक्टर है। 3443 CC बड़े इंजन के साथ फार्मट्रैक चौंपियन 39 न केवल उत्पादन बढ़ाने के लिए शक्ति उत्पन्न करता है बल्कि आसानी से बड़े उपकरणों को भी चलाता है। फार्मट्रैक चौंपियन 39 ट्रैक्टर से जुड़ी जानकारी के बारे में आप इस लेख में विस्तार से जानेंगे।

फार्मट्रैक चौंपियन 39 इंजन की विशेषताएँ

- फार्मट्रैक चौंपियन 39 ट्रैक्टर में 41 HP श्रेणी का इंजन होता है।
- इसमें 3 सिलेंडर और 2340 CC क्षमता वाला इंजन होता है, जो इस श्रेणी में सबसे शक्तिशाली है।
- इसके अलावा, इस ट्रैक्टर में कूलिंग सिस्टम को बनाए रखने के लिए रिकवरी बोतल दी जाती है और ईंधन सप्लाई के लिए My Bosch का Inline पंप दिया गया है।
- इस पंप को मेंटेनेंस-फ्री रखने के लिए एक पानी का सेपरेटर भी दिया गया है।

फार्मट्रैक चौंपियन 39 स्पेसिफिकेशन और फीचर्स

- फार्मट्रैक चौंपियन 39 ट्रैक्टर में साइड माउंटेड रोबॉस्ट बैटरी बॉक्स दिया गया है।
- इसमें पावर स्टीयरिंग होता है, जिससे ट्रैक्टर को कम जगह में आसानी से मोड़ा जा सकता है।
- ट्रैक्टर में सिंगल पीस बोनट और दो गैस स्ट्रोक सपोर्ट होते हैं।
- साथ ही, हैवी ड्यूटी बम्पर और टोह हुक भी दिए गए हैं।

- फार्मट्रैक चौंपियन 39 क्लच टाइप ड्यूल क्लच है।
- ट्रैक्टर में LED हेडलाइट्स और हलोजन बल्ब के साथ विलयर लेंस हैं। पीछे की तरफ मडगार्ड के ऊपर भी LED हेडलाइट्स दिए गए हैं।
- फ्रंट एक्सेल पलेक्सी या अडजस्टेबल है, जो आलू और कपास की खेती के लिए उपयुक्त है।
- फार्मट्रैक चौंपियन 39 ट्रैक्टर में 500 घंटे का सर्विस इंटरवल दिया गया है, साथ ही स्पोर्टी स्टीयरिंग व्हील और साइड शिफ्ट गियर दिए गए हैं।
- ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर के साथ कांस्टेंट टाइप ट्रांसमिशन है।
- फार्मट्रैक चौंपियन 39 में मजबूत ईपीआई बैकएंड है, जो इसे भारी कार्यों में अत्यधिक विश्वसनीय बनाता है।
- इसके टायर आकार 6.0 X 16 (आगे) और 13.6 X 28 (पीछे) हैं।
- इस ट्रैक्टर में 1800 किलोग्राम की भारी हाइड्रोलिक लिफ्ट है, जो इसे भारी उपकरणों को चलाने में सक्षम बनाती है।
- ट्रैक्टर का कुल वजन 1895 किलोग्राम है, और व्हील बेस 2100 मि.मी. है।

फार्मट्रैक चौंपियन 39 ट्रैक्टर कीमत

फार्मट्रैक चौंपियन 39 ट्रैक्टर की कीमत 5.95 लाख से 6.30 लाख रुपये तक होती है, जो विभिन्न स्थानों पर थोड़ी अलग हो सकती है।



ट्रैक्टर खरीदते समय किसानों को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए

ट्रैक्टर खरीदते समय किसानों को कई महत्वपूर्ण बिंदुओं का ध्यान रखना चाहिए। यह एक महत्वपूर्ण निवेश है, और यदि सही तरीके से चयन किया जाए, तो यह कृषि कार्यों में काफी मदद कर सकता है।

ट्रैक्टर खरीदते समय ध्यान में रखने योग्य बातें

ट्रैक्टर खरीदते समय किसानों को कई बातों को ध्यान में रखना चाहिए। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि ट्रैक्टर खरीदते समय निम्नलिखित 12 बिंदु हैं, जिन्हें ध्यान में रखना आवश्यक है:

1. उद्देश्य का निर्धारण: सबसे पहले, यह तय करें कि आपको ट्रैक्टर किस कार्य के लिए चाहिए। क्या यह खेती के लिए, सामान ढोने के लिए या अन्य कार्यों के लिए है? ट्रैक्टर का उपयोग विभिन्न कार्यों के लिए किया जा सकता है जैसे फसल तैयार करना, घास काटना, पानी देना, या कृषि उपकरणों को जोड़ने के लिए।

2. आकार का चयन: ट्रैक्टर का आकार खेत के आकार और उपयोग के हिसाब से होना चाहिए। बड़े खेतों के लिए बड़े ट्रैक्टर की आवश्यकता हो सकती है, जबकि छोटे खेतों के लिए छोटे ट्रैक्टर उपयुक्त हो सकते हैं।

3. शक्ति (HP): ट्रैक्टर की शक्ति भी महत्वपूर्ण है। कृषि कार्यों के लिए ट्रैक्टर की शक्ति का निर्धारण इस बात पर निर्भर करता है कि आपको किस प्रकार के कार्य करने हैं।

4. लागत (Budget): ट्रैक्टर की कीमत विभिन्न होती है, इसलिए अपनी बजट सीमा तय करें और उसी के अनुसार ट्रैक्टर का चयन करें। पुराना ट्रैक्टर खरीदने से आपको कम कीमत में अच्छा ट्रैक्टर मिल सकता है, लेकिन उसके रखरखाव में अधिक खर्च हो सकता है।

5. ब्रांड और गुणवत्ता: ब्रांड का चयन करते समय यह सुनिश्चित करें कि निर्माता का ट्रैक्टर उच्च गुणवत्ता वाला हो और उनकी ग्राहक सेवा अच्छी हो। विश्वसनीय ब्रांड हमेशा बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

6. विक्रेता और सेवा: एक भरोसेमंद और अनुभवी डीलर से ट्रैक्टर खरीदें जो अच्छा सेवा समर्थन प्रदान करता हो। यह भविष्य में किसी समस्या के समाधान में मदद करेगा।

7. नई या पुरानी ट्रैक्टर खरीदें: नए ट्रैक्टर में आम तौर पर बेहतर गारंटी और कम रखरखाव होता है, जबकि पुराने ट्रैक्टरों की कीमत कम होती है लेकिन इनकी कार्यक्षमता और जीवनकाल सीमित हो सकता है।

8. अटैचमेंट: ट्रैक्टर के साथ विभिन्न अटैचमेंट जैसे फ्रंट-एंड लोडर और टिलर का उपयोग किया जा सकता है। यह जानना जरूरी है कि क्या आपको इन अटैचमेंट की आवश्यकता होगी और क्या ट्रैक्टर उन्हें समर्थन कर सकता है।

9. टायर प्रकार: टायरों का चयन भी महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, कुछ कार्यों के लिए टर्फ टायर उपयुक्त होते हैं, जबकि कृषि कार्यों के लिए एजी टायर की आवश्यकता हो सकती है। यह जमीन की स्थिति पर निर्भर करता है।

10. ट्रांसमिशन सिस्टम: ट्रैक्टर मैनुअल और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन विकल्पों के साथ उपलब्ध होते हैं। अपनी सुविधा और आवश्यकता के अनुसार सही ट्रांसमिशन सिस्टम का चयन करें।

11. ईंधन दक्षता: यदि आप ट्रैक्टर का भारी इस्तेमाल करते हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि ट्रैक्टर ईंधन की अच्छी खपत करता हो। यह लंबे समय में आपकी लागत को कम कर सकता है।

12. रखरखाव और सर्विसिंग: ट्रैक्टर की देखरेख और रखरखाव के बारे में विचार करें। क्या आप इसे स्वयं रख सकते हैं या आपको डीलर की सहायता की आवश्यकता होगी? इसके अलावा, स्पेयर पार्ट्स की उपलब्धता भी सुनिश्चित करें।

इन बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए ट्रैक्टर का चयन करना बहुत मददगार हो सकता है। अपने खेत के आकार, कार्य, और बजट के हिसाब से सही ट्रैक्टर का चुनाव कृषि कार्यों को आसान और अधिक प्रभावी बना सकता है।



फर्टिलाइजर स्प्रेडर क्या है? जानिए इसके प्रकार, उपयोग और किसानों के लिए फायदे

फर्टिलाइजर स्प्रेडर एक कृषि उपकरण है, जिसका मुख्य उद्देश्य खेतों में उर्वरक (फर्टिलाइजर) को समान रूप से फैलाना होता है। यह उपकरण उर्वरक के प्रकार और खेत के आकार के आधार पर विभिन्न प्रकार का हो सकता है। प्रमुख प्रकारों में ब्रोडकास्ट स्प्रेडर, ड्रॉप स्प्रेडर और रोटरी स्प्रेडर शामिल हैं। इन उपकरणों का उपयोग न केवल कृषि भूमि पर उर्वरक वितरण के लिए होता है, बल्कि छोटे क्षेत्रों में जैसे बगीचों और लॉन में भी इनका उपयोग किया जाता है।

फर्टिलाइजर स्प्रेडर के प्रकार

- 1. ब्रोडकास्ट स्प्रेडर:** यह एक विस्तृत क्षेत्र में उर्वरक को समान रूप से फैलाता है। बड़े खेतों में इसका प्रयोग बहुत सामान्य है।
- 2. ड्रॉप स्प्रेडर:** यह उर्वरक को उसी स्थान पर गिराता है, जहां से स्प्रेडर गुजरता है, जिससे उर्वरक का सटीक वितरण होता है।
- 3. रोटरी स्प्रेडर:** यह उर्वरक को गोलाकार घुमाव से फैलाता है, जो एक बड़े क्षेत्र को कवर करने में सक्षम होता है।

फर्टिलाइजर स्प्रेडर के उपयोग

1. उर्वरक वितरण: मुख्य रूप से, इसका उपयोग खेतों में उर्वरक को समान रूप से वितरित करने के लिए किया जाता है।

2. लॉन और बगीचों में उर्वरक छिड़काव: छोटे क्षेत्रों में, जैसे बगीचों या लॉन में भी इसे उर्वरक का सही वितरण करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

3. बीज बोना: कुछ स्प्रेडर बीज बोने के लिए भी आदर्श होते हैं, जिससे इस उपकरण का उपयोग कृषि में और अधिक विस्तृत हो जाता है।

फर्टिलाइजर स्प्रेडर के फायदे

1. समय और मेहनत की बचत: मैनुअल तरीके से खाद फैलाने के मुकाबले स्प्रेडर बहुत जल्दी काम करता है। इस तरह, किसान कम समय में अधिक कार्य कर सकते हैं, जिससे समय और श्रम की बचत होती है।

2. उर्वरक की बचत: स्प्रेडर द्वारा उर्वरक की समान और नियंत्रित मात्रा में छिड़काव किया जाता है, जिससे उर्वरक की बर्बादी कम होती है और किसान कम खर्च करते हैं।

3. उपज में वृद्धि: उर्वरक का सही समय पर और सही मात्रा में वितरण होने से पौधों का विकास बेहतर होता है, जिसके परिणामस्वरूप फसल की उपज में वृद्धि होती है।

4. पर्यावरण सुरक्षा: यह सुनिश्चित करता है कि उर्वरक सिर्फ आवश्यक स्थान पर और उचित मात्रा में ही डाला जाए, जिससे पर्यावरण में रासायनिक प्रदूषण कम होता है।

फर्टिलाइजर स्प्रेडर के फायदे

1. समय और मेहनत की बचत: मैन्युअल तरीके से खाद फैलाने के मुकाबले स्प्रेडर बहुत जल्दी काम करता है। इस तरह, किसान कम समय में अधिक कार्य कर सकते हैं, जिससे समय और श्रम की बचत होती है।

2. उर्वरक की बचत: स्प्रेडर द्वारा उर्वरक की समान और नियंत्रित मात्रा में छिड़काव किया जाता है, जिससे उर्वरक की बर्बादी कम होती है और किसान कम खर्च करते हैं।

3. उपज में वृद्धि: उर्वरक का सही समय पर और सही मात्रा में वितरण होने से पौधों का विकास बेहतर होता है, जिसके परिणामस्वरूप फसल की उपज में वृद्धि होती है।

4. पर्यावरण सुरक्षा: यह सुनिश्चित करता है कि उर्वरक सिर्फ आवश्यक स्थान पर और उचित मात्रा में ही डाला जाए, जिससे पर्यावरण में रासायनिक प्रदूषण कम होता है।

5. कृषि की गुणवत्ता में सुधार: यह उपकरण उर्वरक को बेहतर तरीके से वितरित कर, पौधों की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है। इससे कृषि में न केवल उपज बढ़ती है, बल्कि इसके साथ ही कृषि की गुणवत्ता में भी सुधार होता है।

फर्टिलाइजर स्प्रेडर आजकल कृषि क्षेत्र में एक अत्यंत उपयोगी उपकरण बन गया है। इसका उपयोग किसानों को अपनी फसल की उपज को बढ़ाने और समय तथा श्रम की बचत करने में मदद करता है। यह उर्वरक के सटीक और समुचित वितरण को सुनिश्चित करता है, जिससे लागत कम होती है और पर्यावरण को भी फायदा होता है। इस प्रकार, फर्टिलाइजर स्प्रेडर किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण बन चुका है।



मिनी पावर वीडर क्या हैं: खेती में उपयोग, फायदे और विशेषताएँ

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ अधिकांश जनसंख्या खेती से अपना जीवन यापन करती है। किसानों को खेती में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिनमें से खरपतवार एक प्रमुख समस्या है। खरपतवार फसलों के साथ प्रकाश, पानी, स्थान और पोषक तत्वों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, जिससे फसल की उपज पर नकारात्मक असर पड़ता है। ऐसे में किसानों को ऐसे उपकरणों की आवश्यकता होती है, जो समय रहते खरपतवार को नियंत्रित कर सकें। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए मिनी पावर वीडर यंत्र का विकास किया गया है।

मिनी पावर वीडर यंत्र क्या है?

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, मिनी पावर वीडर एक छोटा, हल्का, और शक्तिशाली कृषि यंत्र है। इसका उपयोग खरपतवार को हटाने, मिट्टी को नरम करने और भूमि की जुताई करने के लिए किया जाता है। यह यंत्र छोटे और मध्यम आकार के खेतों में इन कार्यों को बहुत आसानी से करता है, जबकि बड़े खेतों में भी यह खरपतवार नियंत्रण के लिए उपयोगी साबित होता है।

मिनी पावर वीडर के फायदे

मिनी पावर वीडर के उपयोग से किसानों को कई लाभ होते हैं, जिनसे वे बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। इसके प्रमुख फायदे निम्नलिखित हैं:

1. श्रम की बचत और ज्यादा लाभ

यह यंत्र हाथ से की जाने वाली निराई-गुड़ाई की तुलना में तेजी से काम करता है, जिससे श्रम की बचत होती है और उत्पादन में वृद्धि होती है।

2. कम जमीन वाले किसानों के लिए किफायती

मिनी पावर वीडर की कीमत ट्रैक्टर जैसे अन्य उपकरणों से कम होती है, जिससे छोटे किसान इसे आसानी से खरीद सकते हैं।

3. कई कार्यों के लिए उपयुक्त

इसे धान, गेहूं, सब्जियां, गन्ना, और फलदार बागानों में विभिन्न कार्यों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

4. पर्यावरण के अनुकूल

यह यंत्र पावर वीडर और टिलर के मॉडल से बनता है, जो हानिकारक रसायनों की आवश्यकता को कम करता है, जिससे यह पर्यावरण के लिए सुरक्षित होता है।

5. बहुमुखी और टिकाऊ

इस यंत्र में कई प्रकार के अटैचमेंट्स होते हैं, जो इसे विभिन्न कार्यों के लिए उपयुक्त बनाते हैं। यह टिकाऊ होता है और लंबे समय तक चलने वाला निवेश है। इस प्रकार, मिनी पावर वीडर किसानों के लिए एक किफायती और बहुउद्देशीय यंत्र साबित हो सकता है, जो खेती को अधिक प्रभावी और पर्यावरण मित्रवत बनाता है।



सोनालिका DI 30 बागबान सुपर ट्रैक्टर — दमदार पावर, शानदार फीचर्स और कीमत

यदि आप भी किसान हैं और खेती के लिए एक शक्तिशाली ट्रैक्टर की तलाश में हैं, तो सोनालिका कंपनी का सोनालिका DI 30 बागबान सुपर ट्रैक्टर आपके लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है। इस लेख में इस ट्रैक्टर की पूरी जानकारी दी गई है।

सोनालिका DI 30 बागबान सुपर की इंजन पावर?

सोनालिका DI 30 बागबान सुपर ट्रैक्टर में आपको 30 hp का शक्तिशाली इंजन मिल जाता है, इस ट्रैक्टर में आपको 2044 सीसी क्षमता वाला 3 सिलेंडर में Water Cooled इंजन देखने को मिल जाता है। कंपनी का ये ट्रैक्टर 1800 रेटेड आरपीएम पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है।

सोनालिका DI 30 बागबान सुपर ट्रैक्टर के फीचर्स

- सोनालिका DI 30 बागबान सुपर ट्रैक्टर में Sliding Mesh ट्रांसमिशन आपको मिलता है। साथ ही इसके गियरबॉक्स में आपको 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गति के लिए गियरबॉक्स मिल जाते हैं।
- क्लच टाइप की बात करे तो इस ट्रैक्टर में ड्यूल क्लच का ऑप्शन आपको मिल जाता है।
- सोनालिका DI 30 बागबान सुपर ट्रैक्टर में 6 स्प्लिन्डसवाला पीटीओ आपको मिल जाता है, जिससे की आप पीटीओ से चलने वाले सभी यंत्रों को आसानी से चला सकते हैं।
- सोनालिका DI 30 बागबान सुपर ट्रैक्टर में कंपनी ने पावर स्टीयरिंग और विक्लप में मैकेनिकल स्टीयरिंग भी प्रदान किया है।
- इस ट्रैक्टर में 29 लीटर का डीजल टैंक है, जिससे की आप लंबे समय तक बिना रुके कार्य कर सकते हैं।
- सोनालिका DI 30 बागबान सुपर ट्रैक्टर में आपको फ्रंट टायर 5.00 X 15 और रियर टायर 9.50 X 24 के मिल जाते हैं।
- ट्रैक्टर में 1336 किलोग्राम वजन उठाने की क्षमता है, जिससे की आप दुलाई जैसे कार्य भी आसानी से कर सकते हैं।

सोनालिका DI 30 बागबान सुपर की कीमत क्या है?

सोनालिका DI 30 बागबान सुपर ट्रैक्टर की कीमत की बात करे तो इस ट्रैक्टर की कीमत 4.80 लाख से 5.10 लाख रूपए तक है, कीमत में कई स्थानों पर थोड़ा फरक भी देखने को मिलता है।



न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS 4WD: दमदार फीचर्स और सटीक कीमत का संगम

न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS Trem IV CRDI 4WD एक शानदार ट्रैक्टर है। न्यू हॉलैंड 5630 TX Plus Trem IV CRDI 4WD tractor विशेष रूप से बड़े किसानों के लिए उपलब्ध है। 5630 TX प्लस Trem IV CRDI 4WD ट्रैक्टर में सभी नवीनतम तकनीक हैं, जिससे खेत पर बेहतर काम किया जा सकता है। इस लेख में आप न्यू हॉलैंड 5630 TX प्लस ट्रेम IV CRDI 4WD ट्रैक्टर के सभी फीचर्स, गुणवत्ता और उचित मूल्य के बारे में जानेंगे।

न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS ट्रैक्टर की प्रमुख विशेषताएं क्या हैं?

न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS ट्रैक्टर की चमत्कारी विशेषताएं इस ट्रैक्टर को ऐसे किसान के लिए एक आदर्श विकल्प बनाती हैं जो अपनी खेती को बेहतर बनाना चाहते हैं और अपने कृषि व्यवसाय में बड़ी जीत हासिल करना चाहते हैं। ये ट्रैक्टर खेती का जादूगर है जो आपके खेती के कार्यों को आसान बना देगा।

न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS ट्रैक्टर की इंजन और ईंधन क्षमता कैसी है?

- न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS में 75 HP श्रेणी की शक्ति से दहाड़ने वाले एक कुशल और उत्तम दर्जे के इंजन के साथ, यह शक्तिशाली और आधुनिक तकनीक से भरा हुआ ट्रैक्टर किसानों के लिए एकदम सही साथी है।
- इसमें 4 सिलेंडरों के साथ शक्तिशाली इंजन है, जो 2300 आरपीएम उत्पन्न करता है।
- इसके अलावा, ड्राई क्लीनर एयर फिल्टर के साथ इंजन धूल रहित रहता है, जिससे यह सुचारु रूप से और कुशलता से संचालित होता है।
- इंजन को ठंडा रखने के लिए ट्रैक्टर में स्वाभाविक रूप से वाटर कूल्ड सिस्टम दिया गया है।

न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS ट्रैक्टर के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

- न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS ट्रैक्टर में ट्रांसमिशन Fully Constant mesh @ Partial Synchro उमौ दिया है।
- साइड शिफ्ट गियरबॉक्स होने से चालक को ट्रैक्टर के गियर बदलने में आसानी होती है।
- ट्रैक्टर में 12 फॉरवर्ड गति के लिए और 3 रिवर्स गति के लिए गियरबॉक्स प्रदान किये गए हैं।
- अधिक गति विकल्प होने से ट्रैक्टर कम समय में ज्यादा क्षेत्र को कवर करता है जिससे किसान के समय की बचत होती है।
- उन्नत ट्रांसमिशन सिस्टम ट्रैक्टर को सुचारु और आसान कामकाज प्रदान करने में सक्षम बनाता है।
- न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS ट्रैक्टर में स्टीयरिंग पावर स्टीयरिंग दिया गया है। पावर स्टीयरिंग होने से ट्रैक्टर के चालक को ट्रैक्टर को चलने में भी मजा आता है पावर स्टीयरिंग से कम जगह में भी ट्रैक्टर आसानी से घूम जाता है।

- तेल में डूबे हुए ब्रेक ट्रैक्टर होने से ट्रैक्टर को कठिन परिस्थितियों को भी पार करने में मदद मिलती हैं।
- न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS ट्रैक्टर में मजबूत, बड़े आकार के टायर हैं जो किसी भी सतह पर आसानी से ट्रैक्टर को नियंत्रित कर सकते हैं। ट्रैक्टर में फ्रंट टायर्स साइज 12.4 X 24 है और रियर टायर्स का साइज 18.4 X 30 है।
- न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS हाइड्रोलिक्स लिफ्टिंग कैपेसिटी की बात करे तो इस ट्रैक्टर में 2000 किलोग्राम वजन उठाने की क्षमता दी गयी है। न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS ट्रैक्टर में अधिक लिफ्टिंग कैपेसिटी क्षमता होने से ट्रैक्टर आसानी से भारी से भारी वजन को भी उठा सकता है।
- इस ट्रैक्टर में उपकरणों को संचालित करने के लिए सटीक हाइड्रोलिक्स दिया गया है।
- न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS ट्रैक्टर का पीटीओ 69HP पावर का दिया गया है। ट्रैक्टर का पीटीओ एचपी क्षमता इसे किसानों को एक सहज और कुशल खेती का अनुभव कराती है। इसका उन्नत पीटीओ सिस्टम और आसान हैंडलिंग इसे किसी भी किसान के बेड़े के लिए एक विश्वसनीय और मूल्यवान जोड़ बनाते हैं।

न्यू हॉलैंड 5630 TX प्लस ट्रैक्टर कीमत क्या है?

न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS ट्रैक्टर शक्तिशाली 75 HP श्रेणी वाला ट्रैक्टर है। ट्रैक्टर की कीमत 15.20 – 15.70 लाख रुपए तक है। ट्रैक्टर की कीमत में कई स्थानों पर थोड़ा फरक भी आपको देखने को मिलता है। न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS ट्रैक्टर की कीमत भारतीय किसानों के बजट के अनुसार निर्धारित की गई है। यह मुख्य कारण है कि न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS ट्रैक्टर लॉन्च के साथ ही भारतीय किसानों के बीच लोकप्रिय हो गया।



इंडो फार्म 3060 DI HT ट्रैक्टर – पावर, फीचर्स और कीमत की पूरी जानकारी

इंडो फार्म 3060 DI HT ट्रैक्टर भारतीय कृषि क्षेत्र में एक प्रमुख और विश्वसनीय मॉडल के रूप में स्थापित हो चुका है। इसे इंडो फार्म इक्विपमेंट्स लिमिटेड द्वारा बनाया गया है, जो भारतीय किसानों की आवश्यकताओं और कृषि कार्यों की चुनौतियों को समझकर उच्च गुणवत्ता वाले ट्रैक्टर और उपकरणों का उत्पादन करता है। इस ट्रैक्टर को अपनी ताकत, विश्वसनीयता और बेहतरीन प्रदर्शन के लिए जाना जाता है।

इंडो फार्म 3060 DI HT ट्रैक्टर की इंजन पावर

- इस ट्रैक्टर में 50 हॉर्सपावर का शक्तिशाली इंजन लगाया गया है, जो इसे कठोर कृषि कार्यों में सक्षम बनाता है।
- यह इंजन विशेष रूप से भारी कार्यों के लिए डिज़ाइन किया गया है और लंबी अवधि तक बिना किसी समस्या के चलता है।
- इसमें 3 सिलेंडर होते हैं और ट्रैक्टर का इंजन 2000 आरपीएम पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है।

इंडो फार्म 3060 DI HT ट्रैक्टर के फीचर्स

इंडो फार्म 3060 DI HT ट्रैक्टर आधुनिक फीचर्स से भरपूर ट्रैक्टर है, जो कि खेती को उन्नत बनने के लिए बनाया गया है इसके फीचर्स निम्नलिखित हैं:

पीटीओ पावर और एयर फ़िल्टर

- इंडो फार्म 3060 DI HT ट्रैक्टर की पीटीओ पावर 52 एचपी है, जो इसे सभी प्रकार के पीटीओ संचालित उपकरणों को चलाने के लिए आदर्श बनाती है।

इस ट्रैक्टर में क्वाल जलचम कनंस मसमउमदज वाला एयर फिल्टर भी दिया गया है, जो इंजन को स्वच्छ रखने में मदद करता है और इसके प्रदर्शन को बढ़ाता है।

उच्च दक्षता वाला गियरबॉक्स और स्टीयरिंग

- यह ट्रैक्टर 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर के साथ आता है, जो किसानों को गति और टॉर्क को सही तरीके से नियंत्रित करने की सुविधा प्रदान करता है।
- इसके साथ ही, इसमें Side Shift Partial Constant Mesh ट्रांसमिशन दिया गया है, जो इसकी कार्यक्षमता को और बढ़ाता है।
- स्टीयरिंग प्रणाली की बात करें तो इंडो फार्म 3060 DI HT ट्रैक्टर में पावर/मैकेनिकल स्टीयरिंग का विकल्प है, जो इसे नियंत्रित करने में आसान बनाता है और ट्रैक्टर की प्रतिक्रिया को तेज और सटीक बनाता है।

कुशल ब्रेकिंग सिस्टम और हाइड्रोलिक क्षमता

- इस ट्रैक्टर में ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स सिस्टम लगाया गया है, जो उच्च सुरक्षा प्रदान करता है और ट्रैक्टर के नियंत्रण को बेहतर बनाता है।
- इसके साथ ही, इसकी हाइड्रोलिक क्षमता 1800 किलोग्राम तक की लोड उठाने की क्षमता देती है, जो इसे विभिन्न कृषि कार्यों में उपयोगी बनाती है।

टायर और अन्य विशेषताएँ

इंडो फार्म 3060 DI HT ट्रैक्टर के फ्रंट टायर 7-50 X 16 और रियर टायर 16-9 X 28 होते हैं, जो ट्रैक्टर की स्थिरता और पकड़ को बढ़ाते हैं।

इंडो फार्म 3060 DI HT ट्रैक्टर की कीमत

इस ट्रैक्टर की कीमत भारतीय बाजार में लगभग 8.60 से 9.10 लाख रुपये के बीच है, लेकिन यह कीमत विभिन्न स्थानों पर भिन्न हो सकती है। इस ट्रैक्टर के साथ, भारतीय किसान कृषि के विभिन्न पहलुओं में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं और अपने कृषि कार्यों को अधिक दक्षता से पूरा कर सकते हैं। साथ ही, यह ट्रैक्टर हर प्रकार के कृषि उपकरणों के लिए उपयुक्त है, जिससे यह एक बहुउद्देशीय ट्रैक्टर बनता है। कृषि कार्यों के लिए उपयुक्तता प्रदान करता है। इसके उपयोग से किसानों को खेती में मदद मिलती है, साथ ही यह उनके कृषि कार्यों को और अधिक आसान और प्रभावी बनाता है।



mahindra
TRACTORS

• TOUGH HARDUM •

माइलेज शानदार, पावर दमदार



Mahindra
275DI TU
XP PLUS

29.1 kW (39 HP)



सीमांत किसानों के लिए मल्टी फार्मिंग: लाभ, तकनीक और उत्पादन बढ़ाने के उपाय

हमारे देश में अधिकांश सीमांत किसान हैं जिनके पास 1 या 2 हेक्टेयर से कम जमीन है। बड़े किसान तो खेती करके मुनाफा कमा लेते हैं, लेकिन छोटे और सीमांत किसानों को उतना लाभ नहीं हो पाता है। ऐसे किसानों के लिए खेती की यह तकनीक बहुत लाभकारी है जिसे मल्टी फार्मिंग कहते हैं। इस तकनीक का उपयोग करके सीमांत किसान भी अपनी कम जमीन में खेती करके अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।

मल्टी फार्मिंग क्या होती है? (what is multi farming)

मल्टी-फार्मिंग, जिसे मल्टीपल क्रॉपिंग या इंटरक्रॉपिंग के रूप में भी जाना जाता है, एक कृषि पद्धति है जिसमें एक ही बढ़ते मौसम के दौरान एक ही भूमि पर एक साथ कई फसलें उगाई जाती हैं। इसमें दो या दो से अधिक फसलों की एक साथ खेती इस तरह से की जाती है कि वे एक दूसरे की उपस्थिति से पारस्परिक रूप से लाभान्वित हों और उपलब्ध संसाधनों के उपयोग को अनुकूलित करें।

मल्टी फार्मिंग के क्या लाभ हैं? (Benefits of Multi Farming)

बहुफसली खेती के कई लाभ हैं, जैसे प्रति इकाई क्षेत्र में वृद्धि, संसाधनों का कुशल उपयोग, कीट और रोग की घटनाओं में कमी, मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार और जोखिम में कमी। यह किसानों को विविध और स्थिर आय के स्रोत भी प्रदान करता है, क्योंकि विभिन्न फसलों की बाजार मांग और मूल्य में उतार-चढ़ाव अलग-अलग हो सकते हैं। इस प्रणाली के और भी लाभ निम्नलिखित हैं:

1. उत्पादकता में वृद्धि

बहुफसली प्रणालियां उपलब्ध संसाधनों, जैसे धूप, पानी और पोषक तत्वों का कुशल उपयोग करने की अनुमति देती हैं। एक साथ कई फसलें उगाकर, किसान स्थान और समय का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं, जिससे भूमि की प्रति इकाई कुल उत्पादकता में वृद्धि हो सकती है।

2. मिट्टी की उर्वरता में सुधार

विभिन्न फसलों की पोषक तत्वों की आवश्यकता और ग्रहण पैटर्न अलग-अलग होते हैं। रोटेशन या इंटरक्रॉपिंग सिस्टम में विविध फसलें उगाकर, एक फसल की पोषक तत्वों की मांग को दूसरी फसल द्वारा संतुलित किया जा सकता है। इससे पोषक तत्वों की कमी को रोका जा सकता है और मिट्टी की उर्वरता बनाए रखी जा सकती है।

3. खरपतवार नियंत्रण

बहुफसली फसलें खरपतवार नियंत्रण में सहायता कर सकती हैं। सघन रोपण और विविध फसल छत्रियां मिट्टी को छायादार बना सकती हैं, जिससे खरपतवार का अंकुरण और वृद्धि कम हो सकती है। कुछ फसलों में एलोपैथिक प्रभाव होते हैं जो प्राकृतिक पदार्थों को छोड़ते हैं और विशिष्ट खरपतवारों के विकास को रोकते हैं।

4. कीट और रोग प्रबंधन

विभिन्न पौधों की प्रजातियों के साथ अंतः फसल लगाने से कीट और रोग चक्र बाधित हो सकते हैं। फसलों को मिलाने से, विशिष्ट फसलों को लक्षित करने वाले कीट और रोग भ्रमित या विचलित हो सकते हैं, जिससे उनका प्रभाव कम हो जाता है। इसके अलावा, कुछ साथी पौधे लाभकारी कीड़ों को आकर्षित कर सकते हैं जो कीटों को नियंत्रित करने में मदद करते हैं, प्राकृतिक कीट प्रबंधन प्रदान करते हैं।

5. जोखिम विविधीकरण

कई फसलें उगाने से किसान के आय स्रोतों में विविधता आती है और फसल खराब होने का जोखिम कम हो जाता है। यदि प्रतिकूल मौसम की स्थिति या कीटों के कारण एक फसल विफल हो जाती है, तो सिस्टम में अन्य फसलें अभी भी पनप सकती हैं, जिससे कुछ स्तर की आय और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

6. संसाधनों का कुशल उपयोग

विभिन्न फसलों की पानी की आवश्यकता और जड़ प्रणाली अलग-अलग होती हैं। अलग-अलग पानी की जरूरतों या जड़ों की गहराई वाली फसलों को इंटरक्रॉप करके, किसान पानी के उपयोग को अनुकूलित कर सकते हैं और पानी के तनाव को कम कर सकते हैं। फसलें पोषक तत्वों के ग्रहण और उपयोग में एक दूसरे की पूरक हो सकती हैं, संसाधन दक्षता को अधिकतम कर सकती हैं।

7. बाजार में लचीलापन

बहुफसली खेती से किसान बाजार की विभिन्न मांगों को पूरा कर सकते हैं। विविध फसलों के साथ, वे अलग-अलग बाजार कीमतों और उतार-चढ़ाव का लाभ उठा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, कई फसलें होने से विभिन्न उत्पादों के मूल्यवर्धन, प्रसंस्करण और विपणन के अवसर मिल सकते हैं।

8. पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं

बहुफसली प्रणालियां जैव विविधता को बढ़ावा देती हैं और पारिस्थितिक संतुलन को बढ़ाती हैं। विविध फसलों की उपस्थिति फायदेमंद कीड़ों, पक्षियों और अन्य जीवों की एक विस्तृत श्रृंखला को आकर्षित करती है, जो पारिस्थितिकी तंत्र के लचीलेपन और स्थिरता में योगदान करती है।



बायो डी-कंपोजर: जैविक खेती के लिए उपयोग, लाभ और बनाने की विधि

आज के समय में किसान अपनी खेती में अधिक उत्पादन और बेहतर गुणवत्ता के लिए बायो डी-कंपोजर का इस्तेमाल करने लगे हैं। यह प्राकृतिक और जैविक तरीका खेती में इस्तेमाल होने वाले रासायनिक कीटनाशकों और उर्वरकों की तुलना में अधिक प्रभावी और सस्ता साबित हो सकता है। बायो डी-कंपोजर के माध्यम से किसान न सिर्फ अपनी फसल को बैक्टीरिया और फंगल बीमारियों से बचा सकते हैं, बल्कि उनकी खेती की लागत भी कम हो जाती है। इस लेख में हम जानेंगे कि बायो डी-कंपोजर का इस्तेमाल कैसे करें और इसके फायदे क्या हैं?

बायो डी-कंपोजर का विकास और उसकी कार्यप्रणाली

बायो डी-कंपोजर को जैविक कृषि अनुसंधान केंद्र द्वारा विकसित किया गया है, जो पूरी तरह से प्राकृतिक है और इसमें रासायनिक उर्वरक या कीटनाशकों की आवश्यकता नहीं होती। यह एक ऐसा कारगर उपाय है, जिससे किसान अपनी फसलों की सुरक्षा कर सकते हैं, बिना रासायनिक उत्पादों का उपयोग किए। यह विधि किसानों के लिए बेहद किफायती है, क्योंकि इसके उपयोग से उन्हें रासायनिक कीटनाशकों और उर्वरकों पर खर्च करने की जरूरत नहीं पड़ती। इसके अलावा, यह भूमि के स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होता है, क्योंकि यह मिट्टी में मौजूद सूक्ष्मजीवों की संख्या को बढ़ाता है और मिट्टी की उर्वरक क्षमता में सुधार करता है।

डी-कंपोजर तैयार करने की विधि

बायो डी-कंपोजर तैयार करना एक सरल प्रक्रिया है। सबसे पहले, 200 लीटर पानी की एक बड़ी टंकी या ड्रम लें और उसमें 2 किलोग्राम पुराना गुड़ डालें। इसके बाद, बायो डी-कंपोजर को एक बोतल में निकालकर लकड़ी से अच्छे से घोलें (ध्यान रहे, हाथ से पानी को न छुएं)। यह मिश्रण 7 दिनों तक अच्छे से मिलाना होता है। 7 दिन बाद यह मिश्रण मिट्टी के रंग जैसा हो जाता है। अब कंपोस्ट तैयार करने के लिए छायादार जगह पर प्लास्टिक शीट बिछाकर उस पर 1 टन गोबर की खाद फैलाएं और फिर 20 लीटर तैयार घोल का छिड़काव करें। यह प्रक्रिया तब तक दोहराएं, जब तक 200 लीटर घोल खत्म न हो जाए। खाद में 60b नमी बनी रहनी चाहिए। इस प्रक्रिया को पूरा करने के बाद, 40 से 50 दिनों के भीतर कंपोस्ट तैयार हो जाएगा।

बायो डी-कंपोजर के फायदे

बायो डी-कंपोजर के अनेक फायदे हैं, जिससे की किसानों को अच्छा मुनाफा हो सकता है। बायो डी-कंपोजर के फायदे निम्नलिखित दिए गए हैं:

1. बीमारियों से सुरक्षा

बायो डी-कंपोजर का उपयोग करने से फसल में बैक्टीरिया और फंगल बीमारियों का असर कम होता है। इससे फसल की सेहत बनी रहती है और उत्पादन में कोई कमी नहीं आती।

2. कीट नियंत्रण

बायो डी-कंपोजर का नियमित उपयोग कीटों के प्रकोप को नियंत्रित करता है। 30 लीटर बायो डी-कंपोजर को 70 लीटर पानी में मिलाकर 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करने से कीटों का असर कम हो जाता है।

3. उर्वरक की आवश्यकता में कमी

चूंकि बायो डी-कंपोजर में सभी जरूरी पोषक तत्व होते हैं, इसका उपयोग करने से उर्वरक की आवश्यकता भी कम हो जाती है। यह खेती की लागत को कम करता है।

4. जलवायु में सुधार

बायो डी-कंपोजर को ड्रिप सिंचाई या स्प्रिंकलर सिंचाई दोनों में इस्तेमाल किया जा सकता है, जिससे पानी की बचत होती है और फसल को समुचित मात्रा में जल मिलता है।

कैसे करें बायो डी-कंपोजर का छिड़काव?

बायो डी-कंपोजर को खेतों में अच्छे से छिड़काव करने के लिए, 3 भाग पानी में इसे मिलाकर स्प्रे करना चाहिए। यह घोल फसल को सभी आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करता है और उसे बीमारियों से सुरक्षा प्रदान करता है। किसानों का कहना है कि इस उपाय का प्रयोग करने के बाद उन्हें अपनी फसल में किसी भी प्रकार की बीमारी नहीं दिखी, और उर्वरक की आवश्यकता भी कम हो गई। बायो डी-कंपोजर किसानों के लिए एक अत्यधिक लाभकारी साधन बन गया है। यह न सिर्फ प्राकृतिक तरीके से खेती करने में मदद करता है, बल्कि लागत को भी कम करता है। किसानों को इसके उपयोग से कई फायदे मिलते हैं, जैसे कीटनाशक और उर्वरकों पर खर्च में कमी, फसल की सुरक्षा, और बेहतर उत्पादन। जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए बायो डी-कंपोजर एक उपयुक्त और टिकाऊ विकल्प है।



शफतल की खेती: उन्नत बुवाई विधि, सिंचाई प्रबंधन और अधिक उपज पाने के तरीके

शफतल एक चारा फसल है जो की बरसीम के जैसे दिखता है। शफतल को भुकल क्वे नाम से भी जाना जाता है। शफतल पोषण से भरपूर चारा फसल है, शफतल की फसल 60–90 से.मी. ऊँची होती है। इस चारा फसल का मुख्य तना रसीला होता है। इसकी पत्तियाँ बरसीम के जैसी छोटी, अंडाकार और सिरे पर गोल होती हैं, जो चमकीली हरी और थोड़ी रोएँदार होती हैं। आज के इस लेख में हम आपको शफतल की खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

शफतल की खेती के लिए जलवायु और मिट्टी

शफतल की खेती के बरसीम की तरह ठंडी जलवायु में की जाती है। इसको रबी मौसम में उच्च आर्द्रता के साथ उगाया जाता है। इसकी बढ़वार के लिए बादल वाले दिन अच्छे नहीं होते। अंकुरण के लिए तापमान 25 से 30° C और फूल आने के लिए 28 से 30° C अच्छा माना जाता है। शफतल को हल्की ठंडी सर्दियों वाली सभी मिट्टियों में उगाया जा सकता है। शफतल मध्यम से भारी मिट्टी में अच्छी तरह से उगता है, साथ ही कुछ हद तक क्षारीय मिट्टी को सहन करता है। कैल्शियम और फास्फोरस से समृद्ध चिकनी दोमट मिट्टी अच्छी तरह से जल निकासी वाली होनी चाहिए।

शफतल की बुवाई के लिए बीज दर

एक एकड़ में चार से पांच किलो बीजों का प्रयोग करें। शफतल की खेती करते समय 500 ग्राम सरसों के बीज और 12 किलो जई के बीज को मिलाकर अधिक उत्पादन प्राप्त करें।

शफतल की फसल में सिंचाई प्रबंधन

शफतल फसल सिंचाई चाहती है। पहली बार हल्की मिट्टी में बिजाई के तीन से छह दिनों बाद और भारी मिट्टी में बिजाई के छह से आठ दिनों बाद सिंचाई करें। गर्मियों में 9–10 दिनों के फासले पर और सर्दियों में 10–15 दिनों के फासले पर अतिरिक्त सिंचाई करें (जलवायु के परिस्थितियों के आधार पर)।

शफतल की कटाई कब करें

शफतल की कटाई बुवाई के 40–45 दिनों के बाद की जाती है। अगली कटाई: 20–25 दिनों के अंतराल पर की जाती है। इसकी कुल उपज 50 क्विंटल प्रति एकड़ तक हो जाती है।



विदेशी बकरियों की बेहतरीन नस्लें: दूध उत्पादन और ऊन के लिए सबसे लाभकारी नस्लें

देश में बकरी पालन धीरे-धीरे एक लाभकारी व्यवसाय बनता जा रहा है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। जबकि कई दशकों से गांवों में बकरी पालन किया जाता रहा है, आज यह व्यवसाय आधुनिक कृषि क्षेत्र में तेजी से विकसित हो रहा है। भारत में पाई जाने वाली अधिकांश बकरियां मुख्य रूप से मांस उत्पादन के लिए उपयुक्त हैं, लेकिन विदेशी बकरियों की नस्लों को भी अब भारत में आयात किया जाता है। इन नस्लों का पालन किया जाता है, ताकि भारतीय बकरियों की दूध उत्पादन क्षमता में सुधार किया जा सके और उच्च गुणवत्ता वाली बकरियों का उत्पादन हो सके। इस लेख में हम विदेशी बकरियों की प्रमुख नस्लों की जानकारी देंगे।

विदेशी बकरियों की प्रमुख नस्लें

भारत में विदेशों से आयातित बकरियों की प्रमुख नस्लें टोगेनबर्ग, सैनेन, फ्रेंच अल्पाइन, न्युबियन और अंगोरा जैसी नस्लें हैं। इन नस्लों को दूध उत्पादन और उच्च गुणवत्ता वाले रेशे के लिए जाना जाता है। इन नस्लों का पालन करने से भारतीय किसानों को उच्च दूध उत्पादन, बेहतर नस्लों और उत्कृष्ट प्रजनन की सुविधा मिल रही है।

1. टोगेनबर्ग नस्ल की बकरी

- यह नस्ल स्विट्जरलैंड के टोगेनबर्ग घाटी से आती है। टोगेनबर्ग बकरियों का शरीर मजबूत और त्वचा नरम होती है।
- इनकी औसत दूध उत्पादन क्षमता 5.5 किलोग्राम प्रति दिन होती है।
- इस नस्ल की बकरियों का दूध मक्खन वसा से भरपूर होता है।
- इनकी त्वचा लचीली होती है और सींग नहीं होते हैं।

2. सैनेन नस्ल की बकरी

- स्विट्जरलैंड की सैनेन घाटी से निकली सैनेन बकरियाँ उच्च दूध उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं।
- इनका रंग सफेद या हल्का क्रीम होता है।
- इन बकरियों का औसत दूध उत्पादन 2–5 किलोग्राम प्रति दिन होता है और दूध में वसा की मात्रा 3–5% होती है।
- ये बकरियाँ अपने उच्च दूध उत्पादन और स्थिरता के लिए जानी जाती हैं।

3. अल्पाइन बकरी

- अल्पाइन नस्ल फ्रेंच, स्विट्स और रॉक अल्पाइन के नाम से जानी जाती है।
- यह एक दुग्ध उत्पादक नस्ल है, जिसका औसत दूध उत्पादन 2–3 किलोग्राम प्रति दिन होता है।
- इन बकरियों का दूध वसा 3–4% होता है और ये बकरियाँ विभिन्न रंगों में पाई जाती हैं।

4. न्युबियन बकरी

- यह नस्ल उत्तर-पूर्वी अफ्रीका के नूबिया क्षेत्र से है, और इन बकरियों को आम तौर पर लंबी टांगों और मजबूत शरीर की विशेषता प्राप्त है।
- न्युबियन बकरियों का क्रॉस ब्रिटेन की देशी नस्लों और भारत की जमुनापारी बकरियों से किया गया है।
- इन बकरियों की दूध उत्पादन क्षमता बहुत उच्च होती है, औसतन 3–4 किलोग्राम दूध प्रति दिन प्राप्त किया जा सकता है।

5. अंगोरा बकरी

- यह तुर्की या एशिया माइनर की नस्ल है, जो उच्च गुणवत्ता वाले रेशे का उत्पादन करती है।
- अंगोरा बकरियों का आकार छोटा होता है और उनके शरीर से उच्च गुणवत्ता वाली ऊन प्राप्त होती है, जो फाइबर उद्योग में उपयोगी होती है।
- यह नस्ल विशेष रूप से ऊन के लिए प्रसिद्ध है, और यदि इनकी ऊन समय पर नहीं काटी जाती, तो गर्मियों में स्वाभाविक रूप से गिर जाती है।

विदेशी बकरियों की नस्ल को पालने के लाभ

विदेशी नस्लों के पालन से भारतीय किसानों को अनेक लाभ हो रहे हैं। उच्च दूध उत्पादन, उन्नत नस्लों का प्रजनन, और इन बकरियों से मिलने वाले उत्कृष्ट रेशे का बाजार में अच्छा मूल्य होता है। इसके अलावा, विदेशी नस्लों का पालन करके भारत में बकरी पालन को व्यवसाय के रूप में एक नया आयाम मिल रहा है। किसान इन बकरियों से लाभ प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षित हो सकते हैं और विभिन्न प्रकार के कृषि उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार ला सकते हैं।



हल्लीकर गाय की विशेषताएँ । दूध उत्पादन, नस्ल की पहचान और पालन

हल्लीकर, एक स्वदेशी नस्ल की गाय है जो पूर्ववर्ती विजयनगर रियासत, कर्नाटक से उत्पन्न हुई है। यह नस्ल मुख्य रूप से कर्नाटक के मैसूर, मांड्या, हसन, बेंगलूर, कोलार, चित्रदुर्ग और तुमकूर जिलों में पाई जाती है। इन्हें मसलन मैसूर नस्ल भी कहा जाता है। इसे दक्षिण भारत की सबसे बेहतरीन खींचने वाली नस्लों में से एक माना जाता है।

हल्लीकर गाय की विशेषताएँ

- यह नस्ल अपनी खींचने की क्षमता और दौड़ने की क्षमता के लिए जानी जाती है।
- इस नस्ल का रंग हल्के भूरे से लेकर गहरे भूरे तक होता है, जिसमें आगे और पीछे के शरीर के भागों में गहरे शेड होते हैं। इनके चेहरे, गला और शरीर के नीचे हल्के भूरे धब्बे होते हैं।
- यह पशु मध्यम आकार के और मांसल होते हैं, और इनके माथे पर प्रमुख और उभरे हुए उभार होते हैं।
- इनके शरीर लंबे और संकुचित होते हैं, और पैरों की लंबाई पतली और लंबे होती है।
- इनके चेहरे लंबे होते हैं और नथुने की ओर संकुचित होते हैं, जिनका रंग हल्के भूरे से लेकर काले रंग में बदलता है।
- इनके लंबे, ऊर्ध्वाधर और पीछे की ओर मुड़े हुए सींग होते हैं।
- नरों में तुलनात्मक रूप से बड़े कूबड़ होते हैं।
- इनमें पतली और मध्यम रूप से विकसित गला होती है।
- इनकी लिंग छोटी होती है और शरीर के साथ तंग रहती है।
- इनकी पूंछ पतली होती है, जिसका अंत काले रंग के बालों से होता है, जो घुटनों से नीचे तक पहुँचती है।
- वयस्क नर और मादा गाय का वजन क्रमशः लगभग 340 और 227 किलोग्राम होता है।
- पहली बछड़ी देने की आयु 915 से 1800 दिन के बीच होती है।
- दूध उत्पादन औसतन 540 किलोग्राम होता है और इसमें फ़ैट कंटेंट औसतन 5.7% होता है।
- दूध देने की अवधि औसतन 285 दिन होती है और बछड़ा देने के बीच औसतन अंतर 600 दिन होता है।

इन गायों का पालन पेशेवर प्रजनकों और कृषकों दोनों द्वारा किया जाता है। प्रत्येक गाँव में कुछ परिवारों द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी इन गायों का पालन किया जाता है। इस नस्ल को विकसित करने के लिए कर्नाटक राज्य ने चयनात्मक प्रजनन की नीति अपनाई है।

पडलिंग का मास्टर ब्लास्टर

श्रेष्ठ पडलिंग मास्टर



इसके विशेष डिज़ाइन से मिले गीली मिट्टी में भी बेहतरीन ग्रिप



मज़बूत टाई-बार



बेहतर लग स्पेसिंग
और ज़्यादा गहरा ट्रेड



नई तकनीक से बना
Mud Shaker



उपलब्ध साइज़:

13.6 - 28 | 14.9 - 28

#9.50 - 20 | 16.9 - 28



*Coming soon.
*T&C apply



कलिहारी की खेती | बुवाई, खाद, सिंचाई और कटाई की पूरी जानकारी

कलिहारी एक बहुवर्षीय बेल की फसल है। कलिहारी को एक जड़ी-बूटी वाली फसल के तौर पर उगाया जाता है। कलिहारी का उपयोग दवा. इयों में किया जाता है। कलिहारी से तैयार दवा. इयों से जोड़ों का दर्द, एंटीहेलमैथिक, एंटीपेट्रिओ. टक के ईलाज के लिए और पॉलीप्लोइडी को ठीक करने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। आज के इस लेख में हम आपको कलिहारी की खेती के बारे में सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

कलिहारी की खेती के लिए मृदा और जलवायु

कलिहारी की खेती के लिए दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है। इसकी खेती के लिए मिट्टी में उचित पोषक तत्व होने बहुत आवश्यक होती है। मिट्टी में उचित पानी की निकासी की व्यवस्था होनी बहुत जरूरी है। इसकी खेती के लिए गर्म तापमान की आवश्यकता होती है। इसकी खेती के लिए 25–40°C तापमान की आवश्यकता होती है।

कलिहारी की खेती के लिए खेत की तैयारी

कलिहारी को बीजने के लिए भुरभुरी और समतल मिट्टी चाहिए। मिट्टी को हल के साथ अच्छी तरह से जोड़ें। पानी को जमा होने से बचाने के लिए निकास को नियंत्रित करें। कलिहारी की पनीरी की आवश्यकताओं के अनुसार एक छोटे से प्लाट में डालें।

कलिहारी की बुवाई किस समय की जाती है?

कलिहारी एक गर्मी की फसल है, इसकी खेती खरीफ के मौसम में की जाती है। इसकी बिजाई आम रूप से जुलाई और अगस्त में की जाती है। बुवाई के लिए पौधों के अच्छे विकास के लिए 10–12 किंवटल गांठों का प्रति एकड़ में प्रयोग करें। पनीरी वाले पौधों में 60•45 सै.मी. का फासला होना चाहिए। बीज को 6–8 सै.मी. गहराई में बोए, इसकी बिजाई पिछली फसल से प्राप्त गांठों से या बीजों से तैयार पौधों की पनीरी लगा कर की जाती है।

कलिहारी की खेती में खाद और उर्वरक प्रबंधन

खेत की तैयारी के दौरान मिट्टी में जैविक खाद (जैसे हरी खाद या रूडी की खाद) मिलाएं। प्रति एकड़ 48 किलो नाइट्रोजन (यूरिया 104 किलो), 20 किलो फास्फोरस (सिंगल सुपर फास्फेट 125 किलो) और 28 किलो पोटेशियम (पोटाशियम म्यूरेट 46 किलो) डालें। शुरु में, खाद के रूप में बिजाई के दौरान नाइट्रोजन की आधी मात्रा और पूरी मात्रा में फास्फोरस और पोटेश डालें। दो भागों में नाइट्रोजन बाँटें। बिजाई से 30 दिन बाद पहला भाग और बिजाई से 60 दिन बाद दूसरा भाग डालें।

कलिहारी की फसल में सिंचाई प्रबंधन

कलिहारी को अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती। फसल को बेहतर बनाने के लिए कुछ समय के बाद सिंचाई करते रहें। अलग. —अलग समय पर सिंचाई करें, शुरुआत में चार दिनों के फासलों पर नए पौधों को पानी दें। फल कटते समय सिंचाई न करें; इसके बजाय, फल पकते समय दो बार सिंचाई करें। पौधों को जरूरत के अधिक पानी नहीं देना चाहिए, वरना फल पकने से पहले ही गिर जाएंगे।

कलियारी की कटाई

बिजाई से 170–180 दिनों के बाद इसकी कटाई शुरू होती है। जब इसके फल हल्के हरे से गहरे हरे रंग के हो जाते हैं, तो उन्हें काट दिया जाता है। गांठ बिजाई से 5 से 6 साल के बाद काटी जाती है। बीजों की प्राप्ति करने के लिए पके हुए फूलों को लें और मिट्टी के नीचे गांठों को लगाएं।



शंख पुष्पी की खेती: जानें उन्नत तकनीक, जलवायु, मिट्टी और देखभाल के टिप्स

शंख पुष्पी की खेती एक औषधीय फसल के रूप में की जाती है। यह प्राकृतिक रूप से एक जड़ी बूटी फसल होती है। इसका इस्तेमाल कई प्रकार के रोगों को ठीक करने के लिए किया जाता है। शंख पुष्पी की खेती एक वर्षीय पौधे के रूप में की जाती है। इस पौधे का इस्तेमाल कई प्रकार की दवाइयों के निर्माण के लिए भी किया जाता है। इस पौधे को गर्मी वाले स्थानों पर उगाया जाता है। भारत में इस पौधे की खेती कई स्थानों पर आसानी से की जा सकती है। आज के इस लेख में हम आपको शंख पुष्पी की खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

शंख पुष्पी की खेती के लिए जलवायु की आवश्यकता

शंख पुष्पी की खेती एक उष्णकटिबंधीय पौधा है और गर्म, आर्द्र क्षेत्रों में अच्छी तरह उगता है। 350–400 से.मी. वार्षिक वर्षा, जो वर्ष भर अच्छी तरह वितरित हो, इस फसल के लिए आदर्श होती है। यह लगातार नमी की कमी को सहन नहीं कर सकता और शुष्क अवधियों में फूल आने तक बार-बार सिंचाई की आवश्यकता होती है।

शंख पुष्पी की खेती के लिए मिट्टी

शंख पुष्पी की खेती का पौधा बलुई दोमट मिट्टी में अच्छी तरह बढ़ता है, जिसकी पीएच 5.5 से 7.0 के बीच होती है।

इसकी सफल वृद्धि के लिए अच्छी जल निकासी आवश्यक है और जलभराव वाली मिट्टी से किसी भी कीमत पर बचना चाहिए।

शंख पुष्पी की खेती में बुवाई से जुड़ी जानकारी

शंख पुष्पी की खेती के लिए खेत की तैयारी, रोपण सामग्री की तैयारी और रोपाई से जुड़ी बातों का ध्यान रखना बहुत आवश्यक होता है, जो की निम्नलिखित दी गयी हैं:

खेत की तैयारी

क्षेत्र को अच्छी तरह से जोतकर और कई बार हँसो करके मिट्टी को बारीक ढेलेदार बनाया जाना चाहिए। उचित जल निकासी व्यवस्था के लिए खेत को ठीक से समतल किया जाना आवश्यक है। घास के टूट और जड़ों को हटाने के बाद, खेत को सुविधाजनक भूखंडों में विभाजित किया जाता है। भूमि तैयारी के समय लगभग 10 टन एफवाईएम (गोबर खाद) डालना चाहिए। क्यारियों को रिज और फरों (ऊँची मेड़ और नालियाँ) के रूप में तैयार किया जाता है। 15 से.मी. गहरी नालियाँ 120 से.मी. – 150 से.मी. की दूरी पर बनाई जाती हैं।

शंख पुष्पी की रोपण सामग्री की तैयारी

शंख पुष्पी को वाणिज्यिक रूप से इसके भूमिगत प्रकंदों से प्रवर्धित किया जाता है। शंख पुष्पी बढ़ते मौसम के दौरान द्विशाखित कंद उत्पन्न करता है और इनमें से प्रत्येक शाखा में केवल एक बढ़ने वाली कली होती है। प्रकंदों को सावधानीपूर्वक संभालना चाहिए क्योंकि वे नाजुक होते हैं और आसानी से टूट सकते हैं। यदि बढ़ने वाली कली किसी भी प्रकार से क्षतिग्रस्त हो जाती है, तो कंद अंकुरित नहीं होगा। शंख पुष्पी की वृद्धि शक्ति, फूलने और फलने की क्षमता प्रकंदों के आकार पर निर्भर करती है। प्रकंदों का आदर्श वजन लगभग 50–60 ग्राम होना चाहिए।

छोटे प्रकंदों से उत्पन्न पौधे पहले वर्ष में फूल नहीं देते। प्रकंदों को सड़ने से बचाने के लिए, इन्हें कवकनाशी, विशेष रूप से कार्बेन्डाज़िम (0.1%) से उपचारित करना उचित होता है।

शंख पुष्पी का पौध रोपण

उपचारित प्रकंदों को वर्षा ऋतु के दौरान, नालियों में 6–8 से.मी. की गहराई पर, पौधे से पौधे की दूरी 20–30 से.मी. रखते हुए लगाया जाता है। ऐसा कहा गया है कि निकट दूरी पर रोपण करने से परागण की संभावना बढ़ती है और फल सेट में सुधार होता है। औसतन, प्रति एकड़ लगभग 600 किलोग्राम प्रकंदों की आवश्यकता होती है, जिससे प्रति एकड़ 50,000 – 55,000 पौधों की आबादी बनाए रखी जा सकती है।

शंख पुष्पी की फसल में खाद प्रबंधन

हालांकि शंख पुष्पी कम खाद और उर्वरक के साथ भी संतोषजनक वृद्धि करता है, लेकिन मिट्टी में अच्छी तरह से विघटित खाद, बोन मील और उर्वरकों के अतिरिक्त प्रयोग से पौधों की वृद्धि, मजबूत प्रकंद और बेहतर फूल उत्पादन सुनिश्चित होता है। एक एकड़ क्षेत्र के लिए दस टन कंपोस्ट की आवश्यकता होती है। उर्वरक की अनुशंसित मात्रा प्रति हेक्टेयर 60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन (N), 25 कि.ग्रा. फास्फोरस (P_2O_5) और 40 किग्रा पोटाश (K_2O) है। इन पोषक तत्वों में से संपूर्ण फास्फोरस (P_2O_5) और पोटाश (K_2O) तथा नाइट्रोजन (N) का एक-तिहाई भाग आधार खुराक के रूप में दिया जाता है, जबकि शेष दो-तिहाई नाइट्रोजन रोपाई के छह से आठ सप्ताह के भीतर दी जाती है।

शंख पुष्पी की खेती में सिंचाई

शंख पुष्पी की खेती में अंकुरण के दौरान बार-बार सिंचाई की आवश्यकता होती है ताकि मिट्टी की सतह को नरम रखा जा सके और कठोर परत न बने, जो अंकुरण और बढ़ती हुई कली के मिट्टी से बाहर निकलने में बाधा डाल सकती है। अत्यधिक पानी देना पौधे के लिए हानिकारक होता है। प्रारंभिक अवधि में 4–7 दिनों के अंतराल पर और बाद में 15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करने की सिफारिश की जाती है। औसतन, एक पौधे को प्रतिदिन 5 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। फूल आने के बाद सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। खेती वाले क्षेत्रों में बाढ़ सिंचाई प्रचलित है, लेकिन हाल के दिनों में ड्रिप सिंचाई प्रणाली किसानों के बीच लोकप्रिय हो रही है।



IFFCO

पूर्णतः सहकारी स्वामित्व

किसानों की खुशहाली की पहचान

इफको नैनो डीएपी तरल

50 किलो डीएपी का दम अब सिर्फ
आधा लीटर की बोतल में





किसानो की बात मेरी खेती के साथ



www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501

Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010